قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

تِلكَ الرُّسُلُ

पारा - 3

eParah

الجزء 3 وقف لازم

مَّنْ	مِنْهُمْ	عَلٰى بَعْضٍ ۘ	بَعْضَهُمْ	فَضَّلْنَا	الرُّسُلُ	تِلْكَ
जिनसे	उनमें से बाज़ (वो हैं)	बाज़ पर	उनके बाज़ को	फ़ज़ीलत दी हमने	रसूल	ये

عِيْسَى	وَاٰتَيْنَا	دَرَجٰتٍ ؕ	بَعْضَهُمْ	وَرَفَعَ	اللّٰهُ	كَلَّمَ
ईसा	और दीं हमने	दरजात में	उनके बाज़ को	और उसने बुलंद किया	अल्लाह ने	कलाम किया

شَآءَ	وَلَوْ	بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ	وَاَيَّدْنٰهُ	الْبَيِّنٰتِ	ابْنَ مَرْيَمَ
चाहता	और अगर	साथ रुहुल क़ुदुस के	और क़ुव्वत दी हमने उसे	वाज़ेह निशानियां	इबने मरियम को

مَا	مِّنْ بَعْدِ	مِنْ بَعْدِهِمْ	الَّذِيْنَ	اقْتَتَلَ	مَا	اللّٰهُ
उसके जो	बाद	थे उनके बाद	वो जो	बाहम लड़ते	ना	अल्लाह

اٰمَنَ	مَّنْ	فَمِنْهُمْ	اخْتَلَفُوْا	وَلٰكِنِ	الْبَيِّنٰتُ	جَآءَتْهُمُ
ईमान लाया	जो	फिर उनमें से कोई है	उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया	और लेकिन	वाज़ेह निशानियां	आ गईं उनके पास

وَلٰكِنَّ	اقْتَتَلُوْا قف	مَا	اللّٰهُ	شَآءَ	وَلَوْ	كَفَرَ ؕ	مَّنْ	وَمِنْهُمْ
और लेकिन	वो बाहम लड़ते	ना	अल्लाह	चाहता	और अगर	कुफ़्र किया	जिसने	और उनमें से कोई है

33 ع 5 1

مِمَّا	اَنْفِقُوْا	اٰمَنُوْٓا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	يُرِيْدُ ﴿253﴾ ع	مَا	يَفْعَلُ	اللّٰهَ
उसमें से जो	खर्च करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	वो चाहता है	जो	करता है	अल्लाह

وَلَا	فِيْهِ	بَيْعٌ	لَّا	يَوْمٌ	يَّاْتِيَ	اَنْ	مِّنْ قَبْلِ	رَزَقْنٰكُمْ
और ना	उसमें	कोई ख़रीद-फ़रोख़्त	नहीं	वो दिन	आ जाए	कि	उससे पहले	रिज़्क़ दिया हमने तुम्हें

لَآ	اَللّٰهُ	الظّٰلِمُوْنَ ﴿254﴾	هُمُ	وَالْكٰفِرُوْنَ	شَفَاعَةٌ ؕ	وَّلَا	خُلَّةٌ
नहीं	अल्लाह	ज़ालिम हैं	वो ही	और जो काफ़िर हैं	कोई सिफ़ारिश	और ना	कोई दोस्ती

وَّلَا	سِنَةٌ	لَا تَاْخُذُهٗ	الْقَيُّوْمُ ۚ ۵	الْحَيُّ	هُوَ ۚ	اِلَّا	اِلٰهَ
और ना	ऊंघ	नही पकड़ती उसे	क़ायम रखने वाला है	ज़िंदा है	वो ही	मगर	कोई इलाह (बरहक़)

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نَوْمٌ ؕ	لَهٗ	مَا	فِی السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِی الْاَرْضِ ؕ	مَنْ	ذَا الَّذِیْ
नींद	उसी के लिए है	जो कुछ	आसमानों में	और जो कुछ	ज़मीन में है	कौन है	वो जो

یَشْفَعُ	عِنْدَهٗۤ	اِلَّا	بِاِذْنِهٖ ؕ	یَعْلَمُ	مَا	بَیْنَ	اَیْدِیْهِمْ
सिफ़ारिश करे	उसके पास	मगर	उसके इज़्न से	वो जानता है	जो	दर्मियान है	उनके हाथों के

وَمَا	خَلْفَهُمْ ۚ	وَلَا	یُحِیْطُوْنَ	بِشَیْءٍ	مِّنْ عِلْمِهٖۤ	اِلَّا
और जो	उनके पीछे है	और नहीं	वो इहाता कर सकते	किसी चीज़ का	उसके इल्म में से	मगर

بِمَا	شَآءَ ۚ	وَسِعَ	كُرْسِیُّهُ	السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضَ ۚ	وَلَا
जो	वो चाहे	घेर रखा है	उसकी कुर्सी ने	आसमानों	और ज़मीन को	और नहीं

یَـُٔوْدُهٗ	حِفْظُهُمَا ۚ	وَهُوَ	الْعَلِیُّ	الْعَظِیْمُ (255)	لَاۤ اِكْرَاهَ	فِی الدِّیْنِ ۙ
थकाती उसे	हिफाज़त उन दोनों की	और वो	बुलंदतर है	बहुत बड़ा है	नहीं कोई जबर/ज़बरदस्ती	दीन में

قَدْ	تَّبَیَّنَ	الرُّشْدُ	مِنَ الْغَیِّ ۚ	فَمَنْ	یَّكْفُرْ	بِالطَّاغُوْتِ
तहक़ीक़	वाज़ेह हो गई है	हिदायत	गुमराही से	तो जो कोई	कुफ़्र करेगा	ताग़ूत का

وَیُؤْمِنْ	بِاللّٰهِ	فَقَدِ	اسْتَمْسَكَ	بِالْعُرْوَةِ	الْوُثْقٰی ۗ	لَا انْفِصَامَ
और वो ईमान लाएगा	अल्लाह पर	पस तहक़ीक़	उसने थाम लिया	कड़ा	मज़बूत	नहीं है कोई टूटना

لَهَا ؕ	وَاللّٰهُ	سَمِیْعٌ	عَلِیْمٌ (256)	اَللّٰهُ	وَلِیُّ	الَّذِیْنَ	اٰمَنُوْا ۙ
उसके लिए	और अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	अल्लाह	दोस्त है	उनका जो	ईमान लाए

یُخْرِجُهُمْ	مِّنَ الظُّلُمٰتِ	اِلَى النُّوْرِ ؕ	وَالَّذِیْنَ	كَفَرُوْۤا	اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ
वो निकालता है उन्हें	अंधेरों से	तरफ़ नूर के	और जिन्होंने	कुफ़्र किया	दोस्त उनके

الطَّاغُوْتُ ۙ	یُخْرِجُوْنَهُمْ	مِّنَ النُّوْرِ	اِلَى الظُّلُمٰتِ ؕ	اُولٰٓئِكَ	اَصْحٰبُ
ताग़ूत हैं	वो निकालते हैं उन्हें	नूर से	तरफ़ अंधेरों के	यही लोग हैं	साथी

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 34 4 2

النَّارِ ۚ	هُمْ	فِيهَا	خٰلِدُونَ ﴿257﴾ ع	اَلَمْ	تَرَ	اِلَى الَّذِىْ
आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले हैं	क्या नहीं	आपने देखा	तरफ़ उसके जिसने

وقف لازم

حَآجَّ	اِبْرٰهٖمَ	فِىْ رَبِّهٖٓ	اَنْ	اٰتٰىهُ	اللّٰهُ	الْمُلْكَ ۘ	اِذْ
झगड़ा किया	इब्राहीम से	उसके रब के बारे में	कि	अता की उसे	अल्लाह ने	बादशाहत	जब

قَالَ	اِبْرٰهٖمُ	رَبِّىَ	الَّذِىْ	يُحْىٖ	وَيُمِيْتُ ۙ	قَالَ	اَنَا
कहा	इब्राहीम ने	मेरा रब	वो है जो	ज़िंदा करता है	और वो मौत देता है	उसने कहा	मैं

اُحْىٖ	وَاُمِيْتُ ؕ	قَالَ	اِبْرٰهٖمُ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	يَاْتِىْ	بِالشَّمْسِ
मैं ज़िंदा करता हूं	और मैं मौत देता हूं	कहा	इब्राहीम ने	पस बेशक	अल्लाह	लाता है	सूरज को

مِنَ الْمَشْرِقِ	فَاْتِ	بِهَا	مِنَ الْمَغْرِبِ	فَبُهِتَ	الَّذِىْ	كَفَرَ ؕ	
मशरिक़ से	पस तुम ले आओ	उसे	मग़रिब से	पस मबहूत रह गया	वो जिसने	कुफ़्र किया था	

وَاللّٰهُ	لَا يَهْدِى	الْقَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ ۚ ﴿258﴾	اَوْ	كَالَّذِىْ	مَرَّ	عَلٰى
और अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो ज़ालिम हैं	या	मानिंद उसके जो	गुज़रा	ऊपर

قَرْيَةٍ	وَّهِىَ	خَاوِيَةٌ	عَلٰى عُرُوْشِهَا ۚ	قَالَ	اَنّٰى	يُحْىٖ
एक बस्ती के	और वो	गिरी हुई थी	अपनी छतों पर	उसने कहा	किस तरह	ज़िंदा करेगा

هٰذِهِ	اللّٰهُ	بَعْدَ	مَوْتِهَا ۚ	فَاَمَاتَهُ	اللّٰهُ	مِائَةَ	عَامٍ
इसको	अल्लाह	बाद	इसकी मौत के	तो मौत दे दी उसे	अल्लाह ने	सौ	साल

ثُمَّ	بَعَثَهٗ ؕ	قَالَ	كَمْ	لَبِثْتَ ؕ	قَالَ	لَبِثْتُ	يَوْمًا	اَوْ
फिर	उसने उठाया उसे	फ़रमाया	कितना (अरसा)	ठहरे रहे तुम	उसने कहा	ठहरा रहा मैं	एक दिन	या

بَعْضَ	يَوْمٍ ؕ	قَالَ	بَلْ	لَّبِثْتَ	مِائَةَ	عَامٍ	فَانْظُرْ	اِلٰى
कुछ हिस्सा	दिन का	फ़रमाया	बल्कि	ठहरे रहे तुम	सौ	साल	पस देखो	तरफ़

طَعَامِكَ	وَشَرَابِكَ	لَمْ	يَتَسَنَّهْ ۚ	وَانْظُرْ	اِلٰى	حِمَارِكَ
अपने खाने के	और अपने पीने के	नहीं	बासी हुआ वो	और देखो	तरफ़	अपने गधे के

وَلِنَجْعَلَكَ	اٰيَةً	لِّلنَّاسِ	وَانْظُرْ	اِلَى	الْعِظَامِ	كَيْفَ	نُنْشِزُهَا
और ताकि हम बना दें तुम्हें	एक निशानी	लोगों के लिए	और देखो	तरफ़	हड्डियों के	किस तरह	हम उठा कर जोड़ते हैं उन्हें

ثُمَّ	نَكْسُوْهَا	لَحْمًا ؕ	فَلَمَّا	تَبَيَّنَ	لَهٗ ۙ	قَالَ	اَعْلَمُ	اَنَّ
फिर	हम पहनाते हैं उन्हें	गोश्त	फ़िर जब	वाज़ेह हो गया	उसके लिए	उसने कहा	मैं जानता हूं	कि बेशक

اللّٰهَ	عَلٰى	كُلِّ	شَىْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿259﴾	وَاِذْ	قَالَ	اِبْرٰهٖمُ	رَبِّ
अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	बहुत क़ादिर है	और जब	कहा	इब्राहीम ने	ऐ मेरे रब

اَرِنِىْ	كَيْفَ	تُحْىِ	الْمَوْتٰى ؕ	قَالَ	اَوَلَمْ	تُؤْمِنْ ؕ	قَالَ	بَلٰى
दिखा मुझे	किस तरह	तू ज़िंदा करेगा	मुर्दों को	फ़रमाया	क्या भला नहीं	तुम ईमान रखते	उसने कहा	क्यों नहीं

وَلٰكِنْ	لِّيَطْمَئِنَّ	قَلْبِىْ ؕ	قَالَ	فَخُذْ	اَرْبَعَةً	مِّنَ الطَّيْرِ
और लेकिन	ताकि मुत्मइन हो जाए	दिल मेरा	फ़रमाया	पस ले लो	चार	परिंदों में से

فَصُرْهُنَّ	اِلَيْكَ	ثُمَّ	اجْعَلْ	عَلٰى	كُلِّ	جَبَلٍ	مِّنْهُنَّ	جُزْءًا
फिर माइल करो उन्हें	तरफ़ अपने	फिर	रख दो	ऊपर	हर	पहाड़ के	उनमें से	एक हिस्सा

ثُمَّ	ادْعُهُنَّ	يَاْتِيْنَكَ	سَعْيًا ؕ	وَاعْلَمْ	اَنَّ	اللّٰهَ	عَزِيْزٌ
फिर	बुलाओ उन्हें	वो आ जाऐंगे तेरे पास	दौड़ते हुए	और जान लो	बेशक	अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है

حَكِيْمٌ ﴿260﴾ ع	مَثَلُ	الَّذِيْنَ	يُنْفِقُوْنَ	اَمْوَالَهُمْ	فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
ख़ूब हिक्मत वाला है	मिसाल	उनकी जो	खर्च करते हैं	अपने मालों को	अल्लाह के रास्ते में

ع 35 3 3

كَمَثَلِ	حَبَّةٍ	اَنْۢبَتَتْ	سَبْعَ	سَنَابِلَ	فِىْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ	مِّائَةُ
मानिंद मिसाल	एक दाने के है	उस ने उगाईं	सात	बालियां	हर बाली में	सौ

حَبَّةٍ ؕ	وَاللّٰهُ	يُضٰعِفُ	لِمَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ	وَاسِعٌ	عَلِيْمٌ ﴿261﴾
दाने	और अल्लाह	बढ़ाता है	जिसके लिए	वो चाहता है	और अल्लाह	वुसअत वाला है	ख़ूब जानने वाला है

اَلَّذِيْنَ	يُنْفِقُوْنَ	اَمْوَالَهُمْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	ثُمَّ	لَا يُتْبِعُوْنَ	مَآ
वो जो	ख़र्च करते हैं	अपने मालों को	अल्लाह के रास्ते में	फिर	नहीं वो पीछे लाते	उसके जो

اَنْفَقُوْا	مَنًّا	وَّلَآ	اَذًى ۙ	لَّهُمْ	اَجْرُهُمْ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ ۚ
उन्होंने ख़र्च किया	एहसान को	और ना	अज़ियत को	उनके लिए है	अज्र उनका	पास	उनके रब के

وَلَا	خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿262﴾	قَوْلٌ	مَّعْرُوْفٌ
और ना	कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	बात	अच्छी (कहना)

وَّمَغْفِرَةٌ	خَيْرٌ	مِّنْ صَدَقَةٍ	يَّتْبَعُهَآ	اَذًى ؕ	وَاللّٰهُ	غَنِيٌّ
और माफ़ करना	बेहतर है	उस सदक़े से	पीछे आए जिसके	कोई अज़ियत	और अल्लाह	बड़ा बेनियाज़ है

حَلِيْمٌ ﴿263﴾	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	لَا تُبْطِلُوْا	صَدَقٰتِكُمْ	بِالْمَنِّ
बहुत बुर्दबार है	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ना तुम ज़ाया करो	अपने सदक़ात को	साथ एहसान

وَالْاَذٰى ۙ	كَالَّذِيْ	يُنْفِقُ	مَالَهٗ	رِئَآءَ	النَّاسِ	وَلَا	يُؤْمِنُ
और अज़ियत के	उसकी तरह जो	ख़र्च करता है	माल अपना	दिखाने के लिए	लोगों को	और नहीं	वो ईमान लाता

بِاللّٰهِ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	فَمَثَلُهٗ	كَمَثَلِ	صَفْوَانٍ	عَلَيْهِ	تُرَابٌ
अल्लाह पर	और आख़री दिन पर	तो मिसाल उसकी	मानिंद मिसाल	चिकने पत्थर के है	जिस पर	मिट्टी हो

فَاَصَابَهٗ	وَابِلٌ	فَتَرَكَهٗ	صَلْدًا ؕ	لَا يَقْدِرُوْنَ	عَلٰى شَيْءٍ
तो पहुंचे उसे	तेज़ बारिश	तो वो छोड़ दे उसे	साफ़ चट्टान	नहीं वो क़ुदरत रखते होंगे	किसी चीज़ पर

مِمَّا	كَسَبُوْا ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الْكٰفِرِيْنَ ﴿264﴾	وَمَثَلُ
उस में से जो	उन्होंने कमाई की	और अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो काफ़िर हैं	और मिसाल

الَّذِيْنَ	يُنْفِقُوْنَ	اَمْوَالَهُمُ	ابْتِغَآءَ	مَرْضَاتِ	اللّٰهِ	وَتَثْبِيْتًا
उनकी जो	खर्च करते हैं	अपने माल	चाहने के लिए	रज़ामंदी	अल्लाह की	और पुख़्तगी के लिए

مِّنْ اَنْفُسِهِمْ	كَمَثَلِ	جَنَّةٍۭ	بِرَبْوَةٍ	اَصَابَهَا	وَابِلٌ	فَاٰتَتْ
अपने नफ़्सों की	मानिंद मिसाल	एक बाग के है	ऊंची जगह पर	पहुंचे उसे	तेज़ बारिश	तो वो दे

اُكُلَهَا	ضِعْفَيْنِ ۚ	فَاِنْ	لَّمْ	يُصِبْهَا	وَابِلٌ	فَطَلٌّ ؕ	وَاللّٰهُ
फल अपना	दुगना	फिर अगर	ना	पहुंचे उसे	तेज़ बारिश	तो फुवार (ही काफ़ी है)	और अल्लाह

بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	بَصِيْرٌ ﴿265﴾	اَيَوَدُّ	اَحَدُكُمْ	اَنْ	تَكُوْنَ	لَهٗ
उसे जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब देखने वाला है	क्या चाहता है	कोई एक तुम में से	कि	हो	उसके लिए

جَنَّةٌ	مِّنْ نَّخِيْلٍ	وَّاَعْنَابٍ	تَجْرِىْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ ۙ	لَهٗ
एक बाग़	खजूरों का	और अंगूरों का	बहती हों	उसके नीचे से	नहरें	उसके लिए

فِيْهَا	مِنْ كُلِّ	الثَّمَرٰتِ ۙ	وَاَصَابَهُ	الْكِبَرُ	وَلَهٗ	ذُرِّيَّةٌ
उस में	हर तरह के	फल हों	और पहुंचे उसे	बुढ़ापा	और उसकी	औलाद हो

ضُعَفَآءُ ۖ	فَاَصَابَهَآ	اِعْصَارٌ	فِيْهِ	نَارٌ	فَاحْتَرَقَتْ ؕ	كَذٰلِكَ
कमज़ोर (छोटी)	फिर पहुंचे उसे	एक बगोला	जिसमें	आग हो	पस वो जल जाए	इसी तरह

يُبَيِّنُ	اللّٰهُ	لَكُمُ	الْاٰيٰتِ	لَعَلَّكُمْ	تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿266﴾ ع	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
वाज़ेह करता है	अल्लाह	तुम्हारे लिए	निशानियां	ताकि तुम	तुम ग़ौरो फ़िक्र करो	ऐ लोगो जो

ع 36 6 4

اٰمَنُوْٓا	اَنْفِقُوْا	مِنْ طَيِّبٰتِ	مَا	كَسَبْتُمْ	وَمِمَّآ	اَخْرَجْنَا
ईमान लाए हो	खर्च करो	पाकीज़ा चीज़ों में से	जो	कमाईं तुमने	और उसमें से जो	निकाला हमने

لَكُمْ	مِّنَ الْاَرْضِ ۖ	وَلَا	تَيَمَّمُوا	الْخَبِيْثَ	مِنْهُ	تُنْفِقُوْنَ
तुम्हारे लिए	ज़मीन से	और ना	तुम इरादा करो	नापाक का	उसमें से जो	तुम खर्च करते हो

HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَسْتُمْ	بِاٰخِذِيْهِ	اِلَّآ	اَنْ	تُغْمِضُوْا	فِيْهِ ؕ	وَاعْلَمُوْٓا
हालांकि नहीं तुम	लेने वाले उसे	मगर	ये कि	तुम चश्मपोशी कर जाओ	उस में	और जान लो

اَنَّ	اللّٰهَ	غَنِيٌّ	حَمِيْدٌ ﴿267﴾	اَلشَّيْطٰنُ	يَعِدُكُمُ	الْفَقْرَ
बेशक	अल्लाह	बहुत बेनियाज़ है	बहुत तारीफ़ वाला है	शैतान	डराता है तुम्हें	फ़क़्र से

وَيَاْمُرُكُمْ	بِالْفَحْشَآءِ ۚ	وَاللّٰهُ	يَعِدُكُمْ	مَّغْفِرَةً	مِّنْهُ	وَفَضْلًا ؕ
और वो हुक्म देता है तुम्हें	बेहयाई का	और अल्लाह	वादा करता है तुमसे	बख़्शिश का	अपनी तरफ़ से	और फ़ज़्ल का

وَاللّٰهُ	وَاسِعٌ	عَلِيْمٌ ﴿268﴾	يُّؤْتِي	الْحِكْمَةَ	مَنْ	يَّشَآءُ ۚ
और अल्लाह	वुसअत वाला है	ख़ूब जानने वाला है	वो देता है	हिक्मत	जिसे	वो चाहता है

وَمَنْ	يُّؤْتَ	الْحِكْمَةَ	فَقَدْ	اُوْتِيَ	خَيْرًا	كَثِيْرًا ؕ	وَمَا
और जो कोई	दिया गया	हिक्मत	तो तहक़ीक़	वो दिया गया	ख़ैर	कसीर/बहुत ज़्यादा	और नहीं

يَذَّكَّرُ	اِلَّآ	اُولُوا الْاَلْبَابِ ﴿269﴾	وَمَآ	اَنْفَقْتُمْ	مِّنْ نَّفَقَةٍ	اَوْ
नसीहत पकड़ते	मगर	अक़्ल वाले	और जो	ख़र्च किया तुमने	कोई ख़र्च	या

نَذَرْتُمْ	مِّنْ نَّذْرٍ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	يَعْلَمُهٗ ؕ	وَمَا	لِلظّٰلِمِيْنَ
नज़र मानी तुमने	कोई नज़र	तो बेशक	अल्लाह	जानता है उसे	और नहीं	ज़ालिमों के लिए

مِنْ اَنْصَارٍ ﴿270﴾	اِنْ	تُبْدُوا	الصَّدَقٰتِ	فَنِعِمَّا	هِيَ ۚ	وَاِنْ
मददगारों में से कोई	अगर	तुम ज़ाहिर करो	सदक़ात	तो क्या ही अच्छा है	वो	और अगर

تُخْفُوْهَا	وَتُؤْتُوْهَا	الْفُقَرَآءَ	فَهُوَ	خَيْرٌ	لَّكُمْ ؕ	وَيُكَفِّرُ
तुम छुपाओ उन्हें	और तुम दो उन्हें	फ़क़रा को	तो वो	बेहतर है	तुम्हारे लिए	और वो दूर कर देगा

عَنْكُمْ	مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرٌ ﴿271﴾	لَيْسَ
तुमसे	तुम्हारी बुराईयों को	और अल्लाह	उस से जो	तुम अमल करते हो	ख़ूब बाख़बर है	नहीं है

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلَيْكَ	هُدٰىهُمْ	وَلٰكِنَّ	اللّٰهَ	يَهْدِىْ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَمَا
आप पर	हिदायत देना उन्हें	और लेकिन	अल्लाह	हिदायत देता है	जिसे	वो चाहता है	और जो

تُنْفِقُوْا	مِنْ خَيْرٍ	فَلِاَنْفُسِكُمْ ؕ	وَمَا	تُنْفِقُوْنَ	اِلَّا	ابْتِغَآءَ
तुम खर्च करोगे	माल में से	तो तुम्हारे नफ़्सों के लिए है	और नहीं	तुम खर्च करते	मगर	चाहने के लिए

وَجْهِ	اللّٰهِ ؕ	وَمَا	تُنْفِقُوْا	مِنْ خَيْرٍ	يُّوَفَّ	اِلَيْكُمْ	وَاَنْتُمْ
चेहरा	अल्लाह का	और जो	तुम खर्च करोगे	माल में से	वो पूरा दे दिया जाएगा	तुम्हें	और तुम

لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿272﴾	لِلْفُقَرَآءِ	الَّذِيْنَ	اُحْصِرُوْا	فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
ना तुम ज़ुल्म किए जाओगे	(सदक़ात) फ़ुक़रा के लिए हैं	और जो	घेर लिए गए	अल्लाह के रास्ते में

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	ضَرْبًا	فِى الْاَرْضِ ۫	يَحْسَبُهُمُ	الْجَاهِلُ
नहीं वो इस्तिताअत रखते	चलने फिरने की	ज़मीन में	समझता है उन्हें	जाहिल / ना समझ

اَغْنِيَآءَ	مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ	تَعْرِفُهُمْ	بِسِيْمٰهُمْ ۚ	لَا يَسْـَٔلُوْنَ
मालदार	बचने की वजह से (सवाल से)	तुम पहचान लोगे उन्हें	उनके चेहरे की अलामत से	नहीं वो मांगते

النَّاسَ	اِلْحَافًا ؕ	وَمَا	تُنْفِقُوْا	مِنْ خَيْرٍ	فَاِنَّ	اللّٰهَ	بِهٖ
लोगों से	लिपट कर	और जो	तुम खर्च करोगे	माल में से	तो बेशक	अल्लाह	उसे

ع 37 7 5

عَلِيْمٌ ﴿273﴾ ع	اَلَّذِيْنَ	يُنْفِقُوْنَ	اَمْوَالَهُمْ	بِالَّيْلِ	وَالنَّهَارِ	سِرًّا
ख़ूब जानने वाला है	वो जो	खर्च करते हैं	अपने मालों को	रात	और दिन	छुपा कर

وَّعَلَانِيَةً	فَلَهُمْ	اَجْرُهُمْ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ ۚ	وَلَا	خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ
और ऐलानिया तौर पर	तो उनके लिए है	अज्र उनका	पास	उनके रब के	और ना	कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर

وقف منزل

وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُوْنَ ﴿274﴾	اَلَّذِيْنَ	يَاْكُلُوْنَ	الرِّبٰوا	لَا يَقُوْمُوْنَ
और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	वो जो	खाते हैं	सूद	नहीं वो खड़े होंगे

وقف لازم

إِلَّا	كَمَا	يَقُومُ	الَّذِي	يَتَخَبَّطُهُ	الشَّيْطَانُ	مِنَ الْمَسِّ ۚ	ذَٰلِكَ
मगर	जैसा कि	खड़ा होता है	वो जो	ख़बती बना दिया हो उसे	शैतान ने	छू कर	ये

بِأَنَّهُمْ	قَالُوا	إِنَّمَا	الْبَيْعُ	مِثْلُ	الرِّبَا	وَأَحَلَّ
बवजह उसके कि वो	वो कहते हैं	बेशक	तिजारत	मानिंद है	सूद के	हालांकि हलाल किया

اللَّهُ	الْبَيْعَ	وَحَرَّمَ	الرِّبَا ۚ	فَمَنْ	جَاءَهُ	مَوْعِظَةٌ
अल्लाह ने	तिजारत को	और उसने हराम किया	सूद को	तो जो कोई	आ जाए उसके पास	कोई नसीहत

مِنْ رَبِّهِ	فَانْتَهَىٰ	فَلَهُ	مَا	سَلَفَ ۖ	وَأَمْرُهُ	إِلَى اللَّهِ ۖ
उसके रब की तरफ़ से	फिर वो बाज़ आ जाए	तो उसके लिए है	जो	पहले हो चुका	और मामला उसका है	तरफ़ अल्लाह के

وَمَنْ	عَادَ	فَأُولَٰئِكَ	أَصْحَابُ	النَّارِ ۖ	هُمْ	فِيهَا	خَالِدُونَ (275)
और जो कोई	लौट आए	तो यही लोग हैं	साथी	आग के	वो	उसमें	हमेशा रहने वाले है

يَمْحَقُ	اللَّهُ	الرِّبَا	وَيُرْبِي	الصَّدَقَاتِ ۗ	وَاللَّهُ	لَا يُحِبُّ	كُلَّ
मिटाता है	अल्लाह	सूद को	और वो बढ़ाता है	सदक़ात को	और अल्लाह	नही वो पसंद करता	हर

كَفَّارٍ	أَثِيمٍ (276)	إِنَّ	الَّذِينَ	آمَنُوا	وَعَمِلُوا	الصَّالِحَاتِ
सख़्त नाशुक्रे	बहुत गुनाहगार को	बेशक	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

وَأَقَامُوا	الصَّلَاةَ	وَآتَوُا	الزَّكَاةَ	لَهُمْ	أَجْرُهُمْ	عِنْدَ	رَبِّهِمْ ۚ
और उन्होंने क़ायम की	नमाज़	और उन्होंने अदा की	ज़कात	उनके लिए	अजर उनका	पास	उनके रब के

وَلَا	خَوْفٌ	عَلَيْهِمْ	وَلَا	هُمْ	يَحْزَنُونَ (277)	يَا أَيُّهَا الَّذِينَ	آمَنُوا
और ना	कोई ख़ौफ़ होगा	उन पर	और ना	वो	वो ग़मगीन होंगे	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो

اتَّقُوا	اللَّهَ	وَذَرُوا	مَا	بَقِيَ	مِنَ الرِّبَا	إِنْ	كُنْتُمْ
डरो	अल्लाह से	और छोड़ दो	जो	बाक़ी रह गया हो	सूद में से	अगर	हो तुम

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُّؤْمِنِيْنَ (278)	فَاِنْ	لَّمْ	تَفْعَلُوْا	فَاْذَنُوْا	بِحَرْبٍ	مِّنَ اللّٰهِ
ईमान लाने वाले	फिर अगर	ना	तुम करो	तो ऐलान सुन लो	जंग का	अल्लाह से

وَ رَسُوْلِهٖ ۚ	وَ اِنْ	تُبْتُمْ	فَلَكُمْ	رُءُوْسُ	اَمْوَالِكُمْ ۚ
और उसके रसूल से	और अगर	तौबा कर लो तुम	तो तुम्हारे लिए	असल	तुम्हारे मालों का

لَا تَظْلِمُوْنَ	وَ لَا	تُظْلَمُوْنَ (279)	وَ اِنْ	كَانَ	ذُوْ عُسْرَةٍ	فَنَظِرَةٌ
ना तुम ज़ुल्म करोगे	और ना	तुम ज़ुल्म किए जाओगे	और अगर	है वो	तंगदस्त	तो मोहलत देना है

اِلٰى مَيْسَرَةٍ ؕ	وَ اَنْ	تَصَدَّقُوْا	خَيْرٌ	لَّكُمْ	اِنْ	كُنْتُمْ
आसानी तक	और ये कि	तुम सदक़ा कर दो	बेहतर है	तुम्हारे लिए	अगर	हो तुम

تَعْلَمُوْنَ (280)	وَ اتَّقُوْا	يَوْمًا	تُرْجَعُوْنَ	فِيْهِ	اِلَى اللّٰهِ ۗ	ثُمَّ
तुम जानते	और डरो	उस दिन से	तुम लौटाए जाओगे	जिस में	तरफ़ अल्लाह के	फिर

ع 38 8 6

تُوَفّٰى	كُلُّ	نَفْسٍ	مَّا	كَسَبَتْ	وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ (281) ع
पूरा-पूरा दिया जाएगा	हर	नफ़्स को	जो	उस ने कमाया	और वो	ज़ुल्म ना किए जाऐंगे

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْۤا	اِذَا	تَدَايَنْتُمْ	بِدَيْنٍ	اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	जब	तुम बाहम लेन-देन करो	क़र्ज़ का	एक मुक़र्रर वक़्त तक

فَاكْتُبُوْهُ ؕ	وَ لْيَكْتُبْ	بَّيْنَكُمْ	كَاتِبٌۢ	بِالْعَدْلِ ۪	وَ لَا
तो लिख लो उसे	और चाहिए कि लिखे	दर्मियान तुम्हारे	एक लिखने वाला	साथ अदल के	और ना

يَاْبَ	كَاتِبٌ	اَنْ	يَّكْتُبَ	كَمَا	عَلَّمَهُ	اللّٰهُ	فَلْيَكْتُبْ ۚ
इंकार करे	लिखने वाला	कि	वो लिखे	जैसा कि	सिखाया उसे	अल्लाह ने	पस चाहिए कि वो लिखे

وَ لْيُمْلِلِ	الَّذِيْ	عَلَيْهِ	الْحَقُّ	وَ لْيَتَّقِ	اللّٰهَ	رَبَّهٗ
और चाहिए कि इमला कराए	वो शख़्स	जिस पर	हक़ है	और चाहिए कि वो डरे	अल्लाह से	जो रब है उसका

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE TRUST

عَلَيْهِ	الَّذِىْ	كَانَ	فَاِنْ	شَيْـًٔا ؕ	مِنْهُ	يَبْخَسْ	وَلَا
जिस पर	वो शख़्स	हो	फिर अगर	किसी चीज़ की	उस में से	वो कमी करे	और ना

يُّمِلَّ	اَنْ	لَا يَسْتَطِيْعُ	اَوْ	ضَعِيْفًا	اَوْ	سَفِيْهًا	الْحَقُّ
इमला कराए	कि	नहीं वो इस्तिताअत रखता	या	कमज़ोर	या	नादान	हक़ है

شَهِيْدَيْنِ	وَاسْتَشْهِدُوْا	بِالْعَدْلِ ؕ	وَلِيُّهٗ	فَلْيُمْلِلْ	هُوَ
दो गवाह	और गवाह बना लो	साथ अदल के	सरपरस्त उसका	पस चाहिए कि इमला कराए	वो

وَّامْرَاَتٰنِ	فَرَجُلٌ	رَجُلَيْنِ	يَكُوْنَا	لَّمْ	فَاِنْ	مِنْ رِّجَالِكُمْ ۚ
और दो औरतें	तो एक मर्द	दो मर्द	हों वो दोनों	ना	फिर अगर	अपने मर्दों में से

اِحْدٰىهُمَا	تَضِلَّ	اَنْ	مِنَ الشُّهَدَآءِ	تَرْضَوْنَ	مِمَّنْ
उन दोनों में से एक	भूल जाए	कि	गवाहों में से	तुम पसंद करते हो	उन में से जिन्हें

اِذَا مَا	الشُّهَدَآءُ	يَاْبَ	وَلَا	الْاُخْرٰى ؕ	اِحْدٰىهُمَا	فَتُذَكِّرَ
जब भी	गवाह	इंकार करें	और ना	दूसरी को	उन दोनों में से एक	तो याद दिहानी करा दे

كَبِيْرًا	اَوْ	صَغِيْرًا	تَكْتُبُوْهُ	اَنْ	تَسْـَٔمُوْٓا	وَلَا	دُعُوْا ؕ
बड़ा हो	या	छोटा हो	तुम लिख लो उसे	कि	तुम उकताहट महसूस करो	और ना	वो बुलाए जाएं

لِلشَّهَادَةِ	وَاَقْوَمُ	اللّٰهِ	عِنْدَ	اَقْسَطُ	ذٰلِكُمْ	اِلٰٓى اَجَلِهٖ ؕ
गवाही के लिए	और ज़्यादा दुरस्त है	अल्लाह के	नज़दीक	ज़्यादा इंसाफ़ वाला है	ये	उसके मुक़र्रर वक़्त तक

حَاضِرَةً	تِجَارَةً	تَكُوْنَ	اَنْ	اِلَّآ	تَرْتَابُوْٓا	اَلَّا	وَاَدْنٰٓى
हाज़िर	तिजारत	हो	ये कि	मगर	तुम शक में पड़ो	कि ना	और ज़्यादा क़रीब है

تَكْتُبُوْهَا ؕ	اَلَّا	جُنَاحٌ	عَلَيْكُمْ	فَلَيْسَ	بَيْنَكُمْ	تُدِيْرُوْنَهَا
तुम लिखो उसे	कि ना	कोई गुनाह	तुम पर	तो नहीं है	आपस में	तुम लेन-देन करते हो जिस का

وَ اَشْهِدُوْٓا	اِذَا	تَبَايَعْتُمْ ۪	وَلَا	يُضَآرَّ	كَاتِبٌ	وَّلَا
और गवाह बनालो	जब	बाहम ख़रीदो-फ़रोख़्त करो तुम	और ना	नुक़्सान पहुंचाए/पहुंचाया जाए	कातिब	और ना

شَهِيْدٌ ؕ	وَاِنْ	تَفْعَلُوْا	فَاِنَّهٗ	فُسُوْقٌۢ	بِكُمْ ؕ	وَاتَّقُوا	اللّٰهَ ؕ
गवाह	और अगर	तुम (ऐसा) करोगे	तो बेशक वो	नाफ़रमानी है	तुम्हारी	और डरो	अल्लाह से

وَيُعَلِّمُكُمُ	اللّٰهُ ؕ	وَاللّٰهُ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمٌ ﴿282﴾	وَاِنْ
और सिखाता है तुम्हें	अल्लाह	और अल्लाह	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला है	और अगर

كُنْتُمْ	عَلٰى سَفَرٍ	وَّلَمْ	تَجِدُوْا	كَاتِبًا	فَرِهٰنٌ	مَّقْبُوْضَةٌ ؕ
हो तुम	सफ़र पर	और ना	तुम पाओ	कोई कातिब	तो रहन रखना है	क़ब्ज़े में दी हुई (चीज़)

فَاِنْ	اَمِنَ	بَعْضُكُمْ	بَعْضًا	فَلْيُؤَدِّ	الَّذِى	اؤْتُمِنَ
फिर अगर	ऐतबार करे	बाज़ तुम्हारा	बाज़ पर	तो चाहिए कि अदा करे	वो जो	अमीन बनाया गया

اَمَانَتَهٗ	وَلْيَتَّقِ	اللّٰهَ	رَبَّهٗ ؕ	وَلَا	تَكْتُمُوا	الشَّهَادَةَ ؕ
उस की अमानत को	और चाहिए कि वो डरे	अल्लाह से	जो रब है उस का	और ना	तुम छुपाओ	गवाही को

وَمَنْ	يَّكْتُمْهَا	فَاِنَّهٗٓ	اٰثِمٌ	قَلْبُهٗ ؕ	وَاللّٰهُ	بِمَا	تَعْمَلُوْنَ
और जो कोई	छुपाएगा उसे	तो बेशक वो	गुनाहगार है	दिल उसका	और अल्लाह	उसे जो	तुम अमल करते हो

ع 39 2 7

عَلِيْمٌ ﴿283﴾ ع	لِلّٰهِ	مَا	فِى السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِى الْاَرْضِ ؕ	وَاِنْ
ख़ूब जानने वाला है	अल्लाह ही के लिए है	जो	आसमानों में है	और जो	ज़मीन में है	और अगर

تُبْدُوْا	مَا	فِىْٓ اَنْفُسِكُمْ	اَوْ	تُخْفُوْهُ	يُحَاسِبْكُمْ	بِهِ
तुम जाहिर करोगे	जो	तुम्हारे नफ़्सों में है	या	तुम छुपाओगे उसे	मुहासबा करेगा तुम्हारा	साथ उसके

اللّٰهُ ؕ	فَيَغْفِرُ	لِمَنْ	يَّشَآءُ	وَيُعَذِّبُ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ
अल्लाह	फिर वो बख़्श देगा	जिसे	वो चाहेगा	और वो अज़ाब देगा	जिसे	वो चाहेगा	और अल्लाह

© AL-FURQAAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلٰى	كُلِّ	شَىْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿284﴾	اٰمَنَ	الرَّسُوْلُ	بِمَآ	اُنْزِلَ
ऊपर	हर	चीज़ के	बहुत क़ुदरत रखने वाला है	ईमान लाया	रसूल	उस पर जो	नाज़िल किया गया

اِلَيْهِ	مِنْ رَّبِّهٖ	وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ	كُلٌّ	اٰمَنَ	بِاللّٰهِ
तरफ़ उसके	उसके रब की तरफ़ से	और सारे मोमिन (भी)	हर एक	ईमान लाया	अल्लाह पर

وَمَلٰٓئِكَتِهٖ	وَكُتُبِهٖ	وَرُسُلِهٖ قف	لَا نُفَرِّقُ	بَيْنَ	اَحَدٍ
और उसके फ़रिश्तों	और उसकी किताबों	और उसके रसूलों पर	नहीं हम फ़र्क़ करते	दर्मियान	किसी एक के

مِّنْ رُّسُلِهٖ قف	وَقَالُوْا	سَمِعْنَا	وَاَطَعْنَا قف	غُفْرَانَكَ	رَبَّنَا
उसके रसूलों में से	और उन्होंने कहा	सुना हमने	और इताअत की हमने	तेरी मग़फ़िरत (चाहते हैं)	ऐ हमारे रब

وَاِلَيْكَ	الْمَصِيْرُ ﴿285﴾	لَا يُكَلِّفُ	اللّٰهُ	نَفْسًا	اِلَّا	وُسْعَهَا ؕ
और तेरी ही तरफ़	पलटना है	नही तकलीफ़ देता	अल्लाह	किसी नफ़्स को	मगर	उसकी वुसअत भर

لَهَا	مَا	كَسَبَتْ	وَعَلَيْهَا	مَا	اكْتَسَبَتْ ؕ	رَبَّنَا
उसी के लिए है	जो	उसने (नेकी) कमाई	और उसके ज़िम्मे है	जो	उसने (बुराई) कमाई	ऐ हमारे रब

لَا تُؤَاخِذْنَآ	اِنْ	نَّسِيْنَآ	اَوْ	اَخْطَاْنَا ۚ	رَبَّنَا	وَلَا
ना मुआख़ज़ा करना हमारा	अगर	भूल जाऐं हम	या	ख़ता करें हम	ऐ हमारे रब	और ना

تَحْمِلْ	عَلَيْنَآ	اِصْرًا	كَمَا	حَمَلْتَهٗ	عَلَى الَّذِيْنَ
तू डाल	हम पर	ऐसा बोझ	जैसा कि	डाला तू ने उसे	उन पर जो

مِنْ قَبْلِنَا ۚ	رَبَّنَا	وَلَا	تُحَمِّلْنَا	مَا	لَا طَاقَةَ	لَنَا
हम से पहले थे	ऐ हमारे रब	और ना	तू उठवा हमसे	वो जो	नहीं ताक़त	हमारे लिए

بِهٖ ۚ	وَاعْفُ	عَنَّا وقفة	وَاغْفِرْ	لَنَا وقفة	وَارْحَمْنَا وقفة	اَنْتَ
जिस की	और दरगुज़र फ़रमा	हमसे	और बख़्श दे	हमें	और रहम फ़रमा हम पर	तू

ع 40 3 8

مَوْلٰىنَا	فَانْصُرْنَا	عَلَى الْقَوْمِ	الْكٰفِرِيْنَ ع 286
मौला है हमारा	पस मदद फ़रमा हमारी	उन लोगों पर	जो काफ़िर हैं

اٰيَاتُهَا : 200 — 3 سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ 89 — رُكُوْعَاتُهَا : 20

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۚ 1	اللّٰهُ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ۙ	الْحَيُّ	الْقَيُّوْمُ ؕ 2	نَزَّلَ
الٓمّٓ	अल्लाह	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वही	ज़िंदा है	क़ायम रखने वाला है	उसने नाज़िल की

عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	بِالْحَقِّ	مُصَدِّقًا	لِّمَا	بَيْنَ يَدَيْهِ
आप पर	किताब	साथ हक़ के	तस्दीक़ करने वाली है	उन की जो	उससे पहले थीं

وَاَنْزَلَ	التَّوْرٰىةَ	وَالْاِنْجِيْلَ ۙ 3	مِنْ قَبْلُ	هُدًى	لِّلنَّاسِ
और उसने नाज़िल की	तौरात	और इंजील	उस से पहले	हिदायत	लोगों के लिए

وَاَنْزَلَ	الْفُرْقَانَ ؕ	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ	لَهُمْ
और उसने नाज़िल किया	फ़ुरक़ान	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया	साथ आयात के	अल्लाह की	उनके लिए

عَذَابٌ	شَدِيْدٌ ؕ	وَاللّٰهُ	عَزِيْزٌ	ذُو انْتِقَامٍ 4	اِنَّ	اللّٰهَ
अज़ाब है	सख़्त	और अल्लाह	बहुत ज़बरदस्त है	इन्तिक़ाम लेने वाला है	बेशक	अल्लाह

لَا يَخْفٰى	عَلَيْهِ	شَيْءٌ	فِي الْاَرْضِ	وَلَا	فِي السَّمَآءِ ؕ 5	هُوَ
नहीं छुपती	उस पर	कोई चीज़	ज़मीन में	और ना	आसमान में	वो ही है

الَّذِيْ	يُصَوِّرُكُمْ	فِي الْاَرْحَامِ	كَيْفَ	يَشَآءُ ؕ	لَآ	اِلٰهَ
जो	सूरत बनाता है तुम्हारी	रहमों में	जिस तरह	वो चाहता है	नहीं है	कोई इलाह (बरहक़)

اِلَّا	هُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ 6	هُوَ	الَّذِيْٓ	اَنْزَلَ	عَلَيْكَ
मगर	वो ही	बहुत ज़बरदस्त	ख़ूब हिक्मत वाला है	वो ही है	जिसने	नाज़िल की	आप पर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاُخَرُ	الْكِتٰبِ	اُمُّ	هُنَّ	مُّحْكَمٰتٌ	اٰيٰتٌ	مِنْهُ	الْكِتٰبَ
और दूसरी	किताब की	असल हैं	वो	मोहकम हैं	कुछ आयात	उस में से	किताब

فَيَتَّبِعُوْنَ	زَيْغٌ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ	الَّذِيْنَ	فَاَمَّا	مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ
पस वो पैरवी करते हैं	टेढ़ है	दिलों में जिनके	वो लोग	तो रहे	मुताशाबह/बाहम मिलती जुलती हैं

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

تَاْوِيْلِهٖ ۚ	وَابْتِغَآءَ	الْفِتْنَةِ	ابْتِغَآءَ	مِنْهُ	تَشَابَهَ	مَا
मतलब उसका	और चाहने को	फ़ितना	चाहने को	उस में से	मुताशाबह है	उसकी जो

وقف لازم / وقف منزل

فِي الْعِلْمِ	وَالرّٰسِخُوْنَ	اللّٰهُ ۘ	اِلَّا	تَاْوِيْلَهٗٓ	يَعْلَمُ	وَمَا
इल्म में	और जो पुख़्ताकार हैं	अल्लाह	मगर	मतलब उसका	जानता	और नहीं

يَذَّكَّرُ	وَمَا	رَبِّنَا ۚ	مِّنْ عِنْدِ	كُلٌّ	بِهٖ ۙ	اٰمَنَّا	يَقُوْلُوْنَ
नसीहत पकड़ते	और नहीं	हमारे रब के	पास से	सब कुछ	उस पर	ईमान लाए हम	वो कहते हैं

اِذْ	بَعْدَ	قُلُوْبَنَا	لَا تُزِغْ	رَبَّنَا	اُولُوا الْاَلْبَابِ (7)	اِلَّآ
जब	बाद इसके के	हमारे दिलों को	ना तू टेढ़ा कर	ऐ हमारे रब	अक़्ल वाले	मगर

اَنْتَ	اِنَّكَ	رَحْمَةً ۚ	مِنْ لَّدُنْكَ	لَنَا	وَهَبْ	هَدَيْتَنَا
तू ही है	बेशक तू	रहमत	अपने पास से	हमारे लिए	और अता कर	हिदायत दी तूने हमें

لَا رَيْبَ	لِيَوْمٍ	النَّاسِ	جَامِعُ	اِنَّكَ	رَبَّنَآ	الْوَهَّابُ (8)
नहीं कोई शक	एक दिन के लिए	लोगों को	जमा करने वाला है	बेशक तू	ऐ हमारे रब	बहुत अता करने वाला

ع 1 9 9

كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	اِنَّ	الْمِيْعَادَ (9) ع	لَا يُخْلِفُ	اللّٰهَ	اِنَّ	فِيْهِ ؕ
कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	बेशक	वादे के	नहीं ख़िलाफ़ करता	अल्लाह	बेशक	जिस में

شَيْـًٔا ؕ	مِّنَ اللّٰهِ	اَوْلَادُهُمْ	وَلَآ	اَمْوَالُهُمْ	عَنْهُمْ	تُغْنِيَ	لَنْ
कुछ भी	अल्लाह से	औलाद उनकी	और ना	माल उनके	उन्हें	काम आएंगे	हरगिज़ ना

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاُولٰٓئِكَ	هُمْ	وَقُوْدُ	النَّارِ ⑩	كَدَاْبِ	اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ	وَالَّذِيْنَ
और यही लोग	वो	ईंधन हैं	आग का	मानिंद हालत	आले फ़िरऔन की	और वो जो

مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ	كَذَّبُوْا	بِاٰيٰتِنَا ۚ	فَاَخَذَهُمُ	اللّٰهُ	بِذُنُوْبِهِمْ ؕ
उनसे पहले थे	उन्होंने झुठलाया	हमारी आयात को	तो पकड़ लिया उन्हें	अल्लाह ने	बवजह उनके गुनाहों के

وَاللّٰهُ	شَدِيْدُ	الْعِقَابِ ⑪	قُلْ	لِّلَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
और अल्लाह	सख़्त	सज़ा वाला है	कह दीजिए	उनको जिन्होंने	कुफ़्र किया

سَتُغْلَبُوْنَ	وَتُحْشَرُوْنَ	اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ	وَبِئْسَ	الْمِهَادُ ⑫	
अनक़रीब तुम मग़लूब किए जाओगे	और तुम इकट्ठे किये जाओगे	तरफ़ जहन्नम के	और कितना बुरा है	ठिकाना	

قَدْ	كَانَ	لَكُمْ	اٰيَةٌ	فِيْ فِئَتَيْنِ	الْتَقَتَا ؕ	فِئَةٌ
तहक़ीक़	है	तुम्हारे लिए	एक निशानी	दो गिरोहों में	जो आमने-सामने हुए	एक गिरोह

تُقَاتِلُ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	وَاُخْرٰى	كَافِرَةٌ	يَّرَوْنَهُمْ	مِّثْلَيْهِمْ
वो लड़ रहा था	अल्लाह के रास्ते में	और दूसरा	काफ़िर था	वो देख रहे थे उन्हें	दुगना अपने से

رَاْىَ	الْعَيْنِ ؕ	وَاللّٰهُ	يُؤَيِّدُ	بِنَصْرِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	اِنَّ
देखना	आंख का	और अल्लाह	ताईद करता है	अपनी मदद से	जिस की	वो चाहता है	बेशक

فِيْ ذٰلِكَ	لَعِبْرَةً	لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ⑬	زُيِّنَ	لِلنَّاسِ	حُبُّ
इसमें	अलबत्ता इबरत है	अहले बसीरत के लिए	मुज़य्यन कर दी गई	लोगों के लिए	मुहब्बत

الشَّهَوٰتِ	مِنَ النِّسَآءِ	وَالْبَنِيْنَ	وَالْقَنَاطِيْرِ	الْمُقَنْطَرَةِ
ख़्वाहिशात की	औरतों से	और बेटों से	और ख़ज़ानों से	जो इकट्ठे किए गए

مِنَ الذَّهَبِ	وَالْفِضَّةِ	وَالْخَيْلِ	الْمُسَوَّمَةِ	وَالْاَنْعَامِ
सोने से	और चांदी से	और घोड़े	निशान लगे हुए	और मवेशी जानवर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْحَرْثِ ؕ	ذٰلِكَ	مَتَاعُ	الْحَيٰوةِ	الدُّنْيَا ۚ	وَاللّٰهُ	عِنْدَهٗ	حُسْنُ
और खेती से	ये	सामान है	ज़िंदगी का	दुनिया की	और अल्लाह	उसके पास	अच्छा

الْمَاٰبِ (14)	قُلْ	اَؤُنَبِّئُكُمْ	بِخَيْرٍ	مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ	لِلَّذِيْنَ
ठिकाना है	कह दीजिए	क्या मैं ख़बर दूं तुम्हें	बेहतर की	इससे	उनके लिए जिन्होंने

اتَّقَوْا	عِنْدَ رَبِّهِمْ	جَنّٰتٌ	تَجْرِيْ	مِنْ تَحْتِهَا	الْاَنْهٰرُ
तक़वा किया	उनके रब के पास	बाग़ात हैं	बहती हैं	उनके नीचे से	नहरें

خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا	وَاَزْوَاجٌ	مُّطَهَّرَةٌ	وَّرِضْوَانٌ	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	وَاللّٰهُ
हमेशा रहने वाले हैं	उनमें	और बीवियाँ	पाकीज़ा	और रज़ामंदी	अल्लाह की तरफ़ से	और अल्लाह

بَصِيْرٌۢ	بِالْعِبَادِ (15) ۚ	اَلَّذِيْنَ	يَقُوْلُوْنَ	رَبَّنَآ	اِنَّنَآ	اٰمَنَّا
ख़ूब देखने वाला है	बंदों को	वो जो	कहते हैं	ऐ हमारे रब	बेशक हम	ईमान लाए हम

فَاغْفِرْ لَنَا	ذُنُوْبَنَا	وَقِنَا	عَذَابَ	النَّارِ (16) ۚ	اَلصّٰبِرِيْنَ
पस बख़्श दे हमारे लिए	हमारे गुनाहों को	और बचा हमें	अज़ाब से	आग के	सब्र करने वाले

وَالصّٰدِقِيْنَ	وَالْقٰنِتِيْنَ	وَالْمُنْفِقِيْنَ	وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ
और सच्चे	और इताअत गुज़ार	और खर्च करने वाले	और इस्तग़फ़ार करने वाले

بِالْاَسْحَارِ (17)	شَهِدَ	اللّٰهُ	اَنَّهٗ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا	هُوَ ۙ
सहरी के वक़्त	गवाही दी	अल्लाह ने	कि बेशक वो	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर	वो ही

وَالْمَلٰٓئِكَةُ	وَاُولُوا الْعِلْمِ	قَآئِمًا	بِالْقِسْطِ ؕ	لَآ	اِلٰهَ	اِلَّا
और फ़रिश्तों ने	और इल्म वालों ने	(इस हाल में कि वो) क़ायम है	इंसाफ़ पर	नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	मगर

هُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ (18)	اِنَّ	الدِّيْنَ	عِنْدَ اللّٰهِ	الْاِسْلَامُ قف
वो ही	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	बेशक	दीन	अल्लाह के नज़दीक	इस्लाम है

النصف

وَمَا	اخْتَلَفَ	الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	اِلَّا	مِنْۢ بَعْدِ	مَا
और नहीं	इख़्तिलाफ़ किया	उन्होंने जो	दिए गए	किताब	मगर	बाद उसके	जो

جَآءَهُمُ	الْعِلْمُ	بَغْيًۢا	بَيْنَهُمْ ؕ	وَمَنْ	يَّكْفُرْ	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ
आ गया उनके पास	इल्म	बवजह ज़िद के	आपस में	और जो कोई	कुफ़्र करे	साथ आयात के	अल्लाह की

فَاِنَّ	اللّٰهَ	سَرِيْعُ	الْحِسَابِ ⑲	فَاِنْ	حَآجُّوْكَ	فَقُلْ	اَسْلَمْتُ
तो बेशक	अल्लाह	जल्द लेने वाला है	हिसाब	फिर अगर	वो झगड़ा करें आप से	तो कह दीजिए	मैंने सुपुर्द किया

وَجْهِيَ	لِلّٰهِ	وَمَنِ	اتَّبَعَنِ ؕ	وَقُلْ	لِّلَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ
चेहरा अपना	अल्लाह के लिए	और जिसने	इत्तेबा किया मेरा	और कह दीजिए	उनको जो	दिए गए	किताब

وَالْاُمِّيّٖنَ	ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ	فَاِنْ	اَسْلَمُوْا	فَقَدِ	اهْتَدَوْا ۚ	وَاِنْ
और उम्मियों/अनपढ़ों को	क्या इस्लाम लाए तुम	फिर अगर	वो इस्लाम ले आऐं	तो तहक़ीक़	वो हिदायत पा गए	और अगर

تَوَلَّوْا	فَاِنَّمَا	عَلَيْكَ	الْبَلٰغُ ؕ	وَاللّٰهُ	بَصِيْرٌۢ	بِالْعِبَادِ ⑳ ع
वो मुंह मोड़ जाऐं	तो बेशक	आप पर है	पहुंचा देना	और अल्लाह	ख़ूब देखने वाला है	बंदो को

ع 2 11 10

اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَكْفُرُوْنَ	بِاٰيٰتِ	اللّٰهِ	وَيَقْتُلُوْنَ	النَّبِيّٖنَ
बेशक	वो जो	कुफ़्र करते हैं	साथ आयात के	अल्लाह की	और वो क़त्ल करते हैं	नबियों को

بِغَيْرِ	حَقٍّ ۙ	وَّيَقْتُلُوْنَ	الَّذِيْنَ	يَاْمُرُوْنَ	بِالْقِسْطِ	مِنَ النَّاسِ ۙ
बग़ैर	हक़ के	और वो क़त्ल करते हैं	उनको जो	हुक्म देते हैं	इंसाफ़ का	लोगों में से

فَبَشِّرْهُمْ	بِعَذَابٍ	اَلِيْمٍ ㉑	اُولٰٓئِكَ	الَّذِيْنَ	حَبِطَتْ
तो ख़ुशख़बरी दे दीजिए उन्हें	अज़ाब	दर्दनाक की	यही लोग हैं	वो जो	ज़ाया हो गए

اَعْمَالُهُمْ	فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ۫	وَمَا	لَهُمْ	مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ㉒
आमाल उनके	दुनिया में	और आख़िरत में	और नहीं	उनके लिए	मददगारों में से कोई

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَلَمْ	تَرَ	اِلَى الَّذِيْنَ	اُوْتُوْا	نَصِيْبًا	مِّنَ الْكِتٰبِ	يُدْعَوْنَ
क्या नहीं	आप ने देखा	तरफ़ उनके जो	दिए गए	एक हिस्सा	किताब में से	वो बुलाए जाते हैं

اِلٰى	كِتٰبِ اللّٰهِ	لِيَحْكُمَ	بَيْنَهُمْ	ثُمَّ	يَتَوَلّٰى	فَرِيْقٌ	مِّنْهُمْ
तरफ़	अल्लाह की किताब के	ताकि वो फ़ैसला करे	दर्मियान उनके	फिर	मुंह फेर लेता है	एक गिरोह	उनमें से

وَهُمْ	مُّعْرِضُوْنَ (23)	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمْ	قَالُوْا	لَنْ	تَمَسَّنَا
और वो	ऐराज़ करने वाले हैं	ये	बवजह उसके कि वो	कहते हैं	हरगिज़ ना	छुएगी हमें

النَّارُ	اِلَّآ	اَيَّامًا	مَّعْدُوْدٰتٍ ۪	وَغَرَّهُمْ	فِيْ دِيْنِهِمْ
आग	मगर	दिन	गिने-चुने	और धोखे में डाल दिया उन्हें	उनके दीन (के बारे) में

مَّا	كَانُوْا	يَفْتَرُوْنَ (24)	فَكَيْفَ	اِذَا	جَمَعْنٰهُمْ	لِيَوْمٍ
जो	थे वो	वो घढ़ते	तो कैसा (होगा हाल)	जब	जमा करेंगे हम उन्हें	उस दिन के लिए

لَّا رَيْبَ	فِيْهِ ۣ قف	وَوُفِّيَتْ	كُلُّ	نَفْسٍ	مَّا	كَسَبَتْ
नहीं कोई शक	उसमें	और पूरी-पूरी दे दी जाएगी	हर	नफ़्स को	जो	उसने कमाई की

وَهُمْ	لَا يُظْلَمُوْنَ (25)	قُلِ	اللّٰهُمَّ	مٰلِكَ	الْمُلْكِ	تُؤْتِي
और वो	ना वो ज़ुल्म किए जाएंगे	कह दीजिए	ऐ अल्लाह	ऐ मालिक	बादशाहत के	तू देता है

الْمُلْكَ	مَنْ	تَشَآءُ	وَتَنْزِعُ	الْمُلْكَ	مِمَّنْ	تَشَآءُ ۡ	وَتُعِزُّ
बादशाहत	जिसे	तू चाहता है	और छीन लेता है	बादशाहत	जिससे	तू चाहता है	और तू इज़्ज़त देता है

مَنْ	تَشَآءُ	وَتُذِلُّ	مَنْ	تَشَآءُ ۭ	بِيَدِكَ	الْخَيْرُ ۭ	اِنَّكَ
जिसे	तू चाहता है	और तू ज़िल्लत देता है	जिसे	तू चाहता है	तेरे हाथ में	भलाई है	बेशक तू

عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	قَدِيْرٌ (26)	تُوْلِجُ	الَّيْلَ	فِي النَّهَارِ	وَتُوْلِجُ
ऊपर	हर	चीज़ के	बहुत क़ादिर है	तू दाख़िल करता है	रात को	दिन में	और तू दाख़िल करता है

النَّهَارَ	فِي الَّيْلِ ۖ	وَتُخْرِجُ	الْحَيَّ	مِنَ الْمَيِّتِ	وَتُخْرِجُ	الْمَيِّتَ
दिन को	रात में	और तू निकालता है	ज़िंदा को	मुर्दा से	और तू निकालता है	मुर्दा को

مِنَ الْحَيِّ ۖ	وَتَرْزُقُ	مَنْ	تَشَآءُ	بِغَيْرِ	حِسَابٍ ﴿27﴾	لَا يَتَّخِذِ
जिंदा से	और तू रिज़्क़ देता है	जिसे	तू चाहता है	बग़ैर	हिसाब के	ना बनाऐं

الْمُؤْمِنُوْنَ	الْكٰفِرِيْنَ	اَوْلِيَآءَ	مِنْ دُوْنِ	الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ	وَمَنْ	يَّفْعَلْ
मोमिन	काफ़िरों को	दोस्त	सिवाए	मोमिनों के	और जो कोई	करेगा

ذٰلِكَ	فَلَيْسَ	مِنَ اللّٰهِ	فِيْ شَيْءٍ	اِلَّآ	اَنْ	تَتَّقُوْا	مِنْهُمْ
ऐसा	तो नहीं वो	अल्लाह से	किसी चीज़ में	मगर	ये कि	तुम बचो	उनसे

تُقٰىةً ؕ	وَيُحَذِّرُكُمُ	اللّٰهُ	نَفْسَهٗ ؕ	وَاِلَى اللّٰهِ	الْمَصِيْرُ ﴿28﴾	قُلْ
बचना	और डराता है तुम्हें	अल्लाह	अपनी ज़ात से	और तरफ़ अल्लाह ही के	पलटना है	कह दीजिए

اِنْ	تُخْفُوْا	مَا	فِيْ صُدُوْرِكُمْ	اَوْ	تُبْدُوْهُ	يَعْلَمْهُ	اللّٰهُ ؕ
अगर	तुम छुपाओ	जो	तुम्हारे सीनों में है	या	तुम ज़ाहिर करो उसे	जानता है उसे	अल्लाह

وَيَعْلَمُ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَاللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ
और वो जानता है	जो	आसमानों में है	और जो	ज़मीन में है	और अल्लाह	ऊपर	हर

شَيْءٍ	قَدِيْرٌ ﴿29﴾	يَوْمَ	تَجِدُ	كُلُّ	نَفْسٍ	مَّا	عَمِلَتْ
चीज़ के	बहुत क़ुदरत रखने वाला है	जिस दिन	पा लेगा	हर	नफ़्स	जो	उसने अमल किया

مِنْ خَيْرٍ	مُّحْضَرًا ۚ	وَّمَا	عَمِلَتْ	مِنْ سُوْٓءٍ ۚ	تَوَدُّ	لَوْ
नेकी में से	हाज़िर किया हुआ	और जो	उस ने अमल किया	बुराई में से	वो चाहेगा	काश

اَنَّ	بَيْنَهَا	وَبَيْنَهٗٓ	اَمَدًا	بَعِيْدًا ؕ	وَيُحَذِّرُكُمُ	اللّٰهُ
बेशक	दर्मियान उसके	और दर्मियान उस की (बुराई) के	फ़ासला होता	दूर का	और डराता है तुम्हें	अल्लाह

3 ع 10 11

نَفْسَهٗ ط	وَاللّٰهُ	رَءُوْفٌۢ	بِالْعِبَادِ (30) ع	قُلْ	اِنْ	كُنْتُمْ	تُحِبُّوْنَ
अपनी ज़ात से	और अल्लाह	बहुत शफ़ीक़ है	बंदों पर	कह दीजिए	अगर	हो तुम	तुम मुहब्बत करते

اللّٰهَ	فَاتَّبِعُوْنِيْ	يُحْبِبْكُمُ	اللّٰهُ	وَيَغْفِرْ	لَكُمْ	ذُنُوْبَكُمْ ط
अल्लाह से	तो पैरवी करो मेरी	मुहब्बत करेगा तुमसे	अल्लाह	और वो बख़्श देगा	तुम्हारे लिए	तुम्हारे गुनाहों को

وَاللّٰهُ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ (31)	قُلْ	اَطِيْعُوا	اللّٰهَ	وَالرَّسُوْلَ ج
और अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	कह दीजिए	इताअत करो	अल्लाह की	और रसूल की

فَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُحِبُّ	الْكٰفِرِيْنَ (32)	اِنَّ	اللّٰهَ
फिर अगर	वो मुंह फेर जाएं	तो बेशक	अल्लाह	नहीं वो मुहब्बत करता	काफ़िरों से	बेशक	अल्लाह ने

اصْطَفٰۤى	اٰدَمَ	وَنُوْحًا	وَّاٰلَ اِبْرٰهِيْمَ	وَاٰلَ عِمْرٰنَ	عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (33) لا
चुन लिया	आदम	और नूह	और आले इब्राहीम	और आले इमरान को	तमाम जहान वालों पर

ذُرِّيَّةًۢ	بَعْضُهَا	مِنْۢ بَعْضٍ ط	وَاللّٰهُ	سَمِيْعٌ	عَلِيْمٌ (34) ج	اِذْ
औलाद हैं	बाज़ उनके	बाज़ की	और अल्लाह	ख़ूब सुनने वाला है	ख़ूब जानने वाला है	जब

قَالَتِ	امْرَاَتُ	عِمْرٰنَ	رَبِّ	اِنِّيْ	نَذَرْتُ	لَكَ	مَا
कहने लगी	बीवी	इमरान की	ऐ मेरे रब	बेशक मैं	नज़र किया मैं ने	तेरे लिए	जो

فِيْ بَطْنِيْ	مُحَرَّرًا	فَتَقَبَّلْ	مِنِّيْ ج	اِنَّكَ	اَنْتَ	السَّمِيْعُ
मेरे पेट में है	आज़ाद	पस तू क़ुबूल कर ले	मुझसे	बेशक तू	तू ही है	ख़ूब सुनने वाला

الْعَلِيْمُ (35)	فَلَمَّا	وَضَعَتْهَا	قَالَتْ	رَبِّ	اِنِّيْ	وَضَعْتُهَاۤ
ख़ूब जानने वाला	फिर जब	उसने जन्म दिया उसे	कहने लगी	ऐ मेरे रब	बेशक मैं	जन्म दिया है मैंने उसे

اُنْثٰى ط	وَاللّٰهُ	اَعْلَمُ	بِمَا	وَضَعَتْ ط	وَلَيْسَ	الذَّكَرُ
लड़की	और अल्लाह	ज़्यादा जानता है	उसे जो	उसने जन्म दिया	और नहीं है	लड़का

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

كَالْاُنْثٰى ۚ	وَاِنِّيْ	سَمَّيْتُهَا	مَرْيَمَ	وَاِنِّيْٓ	اُعِيْذُهَا
लड़की की तरह	और बेशक मैं	नाम रखा है मैंने उसका	मरयम	और बेशक मैं	मैं पनाह में देती हूं उसे

بِكَ	وَذُرِّيَّتَهَا	مِنَ الشَّيْطٰنِ	الرَّجِيْمِ ﴿36﴾	فَتَقَبَّلَهَا	رَبُّهَا
तेरी	और उसकी औलाद को	शैतान से	जो मरदूद है	तो क़ुबूल कर लिया उसे	उसके रब ने

بِقَبُوْلٍ	حَسَنٍ	وَّاَنْۢبَتَهَا	نَبَاتًا	حَسَنًا ۙ	وَّكَفَّلَهَا	زَكَرِيَّا ۭ
क़ुबूल करना	अच्छा	और परवरिश की उसकी	परवरिश	अच्छी	और कफ़ील बनाया उसका	ज़करिया को

كُلَّمَا	دَخَلَ	عَلَيْهَا	زَكَرِيَّا	الْمِحْرَابَ ۙ	وَجَدَ	عِنْدَهَا
जब कभी	दाख़िल होता	उस पर	ज़करिया	मेहराब में	वो पाता	पास उसके

رِزْقًا ۚ	قَالَ	يٰمَرْيَمُ	اَنّٰى	لَكِ	هٰذَا ۭ	قَالَتْ	هُوَ
कोई रिज़्क़	वो कहता	ऐ मरयम	कहां से है	तेरे लिए	ये	वो कहती	वो

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ	اِنَّ	اللّٰهَ	يَرْزُقُ	مَنْ	يَّشَآءُ	بِغَيْرِ
अल्लाह के पास से है	बेशक	अल्लाह	रिज़्क़ देता है	जिसे	वो चाहता है	बग़ैर

حِسَابٍ ﴿37﴾	هُنَالِكَ	دَعَا	زَكَرِيَّا	رَبَّهٗ ۚ	قَالَ	رَبِّ	هَبْ
हिसाब के	उसी जगह / वक़्त	दुआ मांगी	ज़करिया ने	अपने रब से	कहा	ऐ मेरे रब	अता कर

لِيْ	مِنْ لَّدُنْكَ	ذُرِّيَّةً	طَيِّبَةً ۚ	اِنَّكَ	سَمِيْعُ	الدُّعَآءِ ﴿38﴾
मुझे	अपने पास से	औलाद	पाकीज़ा	बेशक तू	ख़ूब सुनने वाला है	दुआ का

فَنَادَتْهُ	الْمَلٰٓئِكَةُ	وَهُوَ	قَآئِمٌ	يُّصَلِّيْ	فِي الْمِحْرَابِ ۙ	اَنَّ
पस पुकारा उसे	फ़रिश्तों ने	जब कि वो	खड़ा	नमाज़ पढ़ रहा था	मेहराब में	बेशक

اللّٰهَ	يُبَشِّرُكَ	بِيَحْيٰى	مُصَدِّقًا	بِكَلِمَةٍ	مِّنَ اللّٰهِ	وَسَيِّدًا
अल्लाह	ख़ुशख़बरी देता है तुझे	याहिया की	तस्दीक़ करने वाला	एक कलिमे की	अल्लाह की तरफ़ से	और सरदार

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَّحَصُوْرًا	وَّنَبِيًّا	مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿39﴾	قَالَ	رَبِّ	اَنّٰى
और पाक बाज़	और नबी होगा	नेक लोगों में से	उस ने कहा	ऐ मेरे रब	कैसे

يَكُوْنُ	لِيْ	غُلٰمٌ	وَّقَدْ	بَلَغَنِيَ	الْكِبَرُ	وَامْرَاَتِيْ	عَاقِرٌ ؕ
होगा	मेरे लिए	लड़का	हालांकि तहक़ीक़	पहुंचा मुझे	बुढ़ापा	और बीवी मेरी	बांझ है

قَالَ	كَذٰلِكَ	اللّٰهُ	يَفْعَلُ	مَا	يَشَآءُ ﴿40﴾	قَالَ	رَبِّ
उसने कहा	इसी तरह	अल्लाह	करता है	जो	वो चाहता है	उसने कहा	ऐ मेरे रब

اجْعَلْ	لِّيْٓ	اٰيَةً ؕ	قَالَ	اٰيَتُكَ	اَلَّا	تُكَلِّمَ	النَّاسَ
बना	मेरे लिए	कोई निशानी	कहा	निशानी तेरी	ये है कि नहीं	तुम कलाम करोगे	लोगों से

ثَلٰثَةَ	اَيَّامٍ	اِلَّا	رَمْزًا ؕ	وَاذْكُرْ	رَّبَّكَ	كَثِيْرًا	وَّسَبِّحْ
तीन	दिन	मगर	इशारे से	और तुम याद करो	अपने रब को	बहुत ज़्यादा	और तस्बीह करो

ع 4 11 12

بِالْعَشِيِّ	وَالْاِبْكَارِ ﴿41﴾ ع	وَاِذْ	قَالَتِ	الْمَلٰٓئِكَةُ	يٰمَرْيَمُ	اِنَّ
शाम के वक़्त	और सुबह के वक़्त	और जब	कहा	फ़रिश्तों ने	ऐ मरयम	बेशक

اللّٰهَ	اصْطَفٰكِ	وَطَهَّرَكِ	وَاصْطَفٰكِ	عَلٰى نِسَآءِ	الْعٰلَمِيْنَ ﴿42﴾
अल्लाह ने	चुन लिया तुझे	और पाक किया तुझे	और चुन लिया तुझे	औरतों पर	तमाम जहान की

يٰمَرْيَمُ	اقْنُتِيْ	لِرَبِّكِ	وَاسْجُدِيْ	وَارْكَعِيْ	مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ﴿43﴾
ऐ मरियम	हमेशा इताअत कर	अपने रब की	और सज्दा कर	और रुकूअ कर	साथ रुकूअ करने वालों के

ذٰلِكَ	مِنْ اَنْۢبَآءِ	الْغَيْبِ	نُوْحِيْهِ	اِلَيْكَ ؕ	وَمَا	كُنْتَ
ये	कुछ ख़बरें हैं	ग़ैब की	हम वही करतें हैं उसे	तरफ़ आप के	और ना	थे आप

لَدَيْهِمْ	اِذْ	يُلْقُوْنَ	اَقْلَامَهُمْ	اَيُّهُمْ	يَكْفُلُ	مَرْيَمَ ۖ
पास उनके	जब	वो डाल रहे थे	क़लमें अपनी	कौन उन में से	कफ़ालत करेगा	मरियम की

وَمَا	كُنْتَ	لَدَيْهِمْ	اِذْ	يَخْتَصِمُوْنَ (44)	اِذْ	قَالَتِ	الْمَلٰٓئِكَةُ
और ना	थे आप	पास उनके	जब	वो झगड़ रहे थे	जब	कहा	फ़रिश्तों ने

يٰمَرْيَمُ	اِنَّ	اللّٰهَ	يُبَشِّرُكِ	بِكَلِمَةٍ	مِّنْهُ ۖ	اسْمُهُ
ऐ मरियम	बेशक	अल्लाह	खुशख़बरी देता है तुझे	एक कलिमे की	अपनी तरफ़ से	नाम उसका होगा

الْمَسِيْحُ	عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ	وَجِيْهًا	فِى الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ
मसीह	ईसा इबने मरियम	बहुत मर्तबे वाला	दुनिया में	और आख़िरत में

وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (45) ۙ	وَيُكَلِّمُ	النَّاسَ	فِى الْمَهْدِ	وَكَهْلًا
और मुक़र्रब बंदों में से होगा	और वो कलाम करेगा	लोगों से	पंघोड़े में	और पुख़्ता उम्र में

وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ (46)	قَالَتْ	رَبِّ	اَنّٰى	يَكُوْنُ	لِىْ	وَلَدٌ
और सालेह लोगों में से होगा	उसने कहा	ऐ मेरे रब	किस तरह	होगा	मेरे लिए	कोई बच्चा

وَّلَمْ	يَمْسَسْنِىْ	بَشَرٌ ط	قَالَ	كَذٰلِكِ	اللّٰهُ	يَخْلُقُ	مَا
हालांकि नहीं	छुआ मुझे	किसी इंसान ने	फ़रमाया	इसी तरह	अल्लाह	पैदा करता है	जो

يَشَآءُ ط	اِذَا	قَضٰٓى	اَمْرًا	فَاِنَّمَا	يَقُوْلُ	لَهٗ	كُنْ	فَيَكُوْنُ (47)
वो चाहता है	जब	वो फ़ैसला कर लेता है	किसी काम का	तो बेशक	वो कहता है	उसे	हो जा	तो वो हो जाता है

وَيُعَلِّمُهُ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ	وَالتَّوْرٰىةَ	وَالْاِنْجِيْلَ (48) ج	وَرَسُوْلًا
और वो तालीम देगा उसे	किताब	और हिक्मत	और तौरात	और इंजील की	और रसूल होगा

اِلٰى	بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ	اَنِّىْ	قَدْ	جِئْتُكُمْ	بِاٰيَةٍ	مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ
तरफ़	बनी इस्राईल के	बेशक मैं	तहक़ीक़	मैं लाया हूं तुम्हारे पास	एक निशानी	तुम्हारे रब की तरफ़ से

اَنِّىْٓ	اَخْلُقُ	لَكُمْ	مِّنَ الطِّيْنِ	كَهَيْـَٔةِ	الطَّيْرِ	فَاَنْفُخُ
बेशक मैं	मैं बना देता हूं	तुम्हारे लिए	मिट्टी से	मानिंद शकल	परिंदे की	फिर मैं फूंक मारता हूं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْهِ	فَيَكُوْنُ	طَيْرًا	بِاِذْنِ اللّٰهِ ج	وَاُبْرِئُ	الْاَكْمَهَ	وَالْاَبْرَصَ
उस में	तो वो हो जाता है	एक परिंदा	अल्लाह के इज़्न से	और मैं अच्छा कर देता हूं	पैदाइशी अंधे को	और बरस वाले को

وَاُحْيِ	الْمَوْتٰى	بِاِذْنِ اللّٰهِ ج	وَاُنَبِّئُكُمْ	بِمَا	تَاْكُلُوْنَ
और मैं जिंदा कर देता हूं	मुर्दों को	अल्लाह के इज़्न से	और मैं ख़बर देता हूं तुम्हें	उसकी जो	तुम खाते हो

وَمَا	تَدَّخِرُوْنَ لا	فِيْ بُيُوْتِكُمْ ط	اِنَّ	فِيْ ذٰلِكَ	لَاٰيَةً	لَّكُمْ
और जो	तुम ज़ख़ीरा करते हो	अपने घरों में	बेशक	उसमें	अलबत्ता एक निशानी है	तुम्हारे लिए

اِنْ	كُنْتُمْ	مُّؤْمِنِيْنَ ﴿49﴾ ج	وَمُصَدِّقًا	لِّمَا	بَيْنَ يَدَيَّ
अगर	हो तुम	ईमान लाने वाले	और तस्दीक़ करने वाला हूं	उसकी जो	मेरे सामने है

مِنَ التَّوْرٰىةِ	وَلِاُحِلَّ	لَكُمْ	بَعْضَ	الَّذِيْ	حُرِّمَ	عَلَيْكُمْ
तौरात में से	और ताकि मैं हलाल कर दूं	तुम्हारे लिए	बाज़	वो चीज़ जो	हराम की गई	तुम पर

وَجِئْتُكُمْ	بِاٰيَةٍ	مِّنْ رَّبِّكُمْ قف	فَاتَّقُوا	اللّٰهَ	وَاَطِيْعُوْنِ ﴿50﴾
और लाया हूं मैं तुम्हारे पास	एक निशानी	तुम्हारे रब की तरफ़ से	पस डरो	अल्लाह से	और इताअत करो मेरी

اِنَّ	اللّٰهَ	رَبِّيْ	وَرَبُّكُمْ	فَاعْبُدُوْهُ ط	هٰذَا	صِرَاطٌ	مُّسْتَقِيْمٌ ﴿51﴾
बेशक	अल्लाह	रब है मेरा	और रब तुम्हारा	पस इबादत करो उसकी	ये	रास्ता है	सीधा

فَلَمَّآ	اَحَسَّ	عِيْسٰى	مِنْهُمُ	الْكُفْرَ	قَالَ	مَنْ	اَنْصَارِيْٓ
फिर जब	महसूस किया	ईसा ने	उन से	कुफ़्र को	कहा	कौन हैं	मददगार मेरे

اِلَى اللّٰهِ ط	قَالَ	الْحَوَارِيُّوْنَ	نَحْنُ	اَنْصَارُ	اللّٰهِ ج	اٰمَنَّا	بِاللّٰهِ ج
तरफ़ अल्लाह के	कहा	हवारियों ने	हम हैं	मददगार	अल्लाह के	हम ईमान लाए	अल्लाह पर

وَاشْهَدْ	بِاَنَّا	مُسْلِمُوْنَ ﴿52﴾	رَبَّنَآ	اٰمَنَّا	بِمَآ	اَنْزَلْتَ
और गवाह रह	बेशक हम	मुसलमान हैं	ऐ हमारे रब	ईमान लाए हम	उस पर जो	नाज़िल किया गया

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَاتَّبَعْنَا	الرَّسُوْلَ	فَاكْتُبْنَا	مَعَ	الشّٰهِدِيْنَ ﴿53﴾	وَمَكَرُوْا	وَمَكَرَ
और पैरवी की हमने	रसूल की	पस लिख ले हमें	साथ	गवाहों के	और उन्होंने चाल चली	और ख़ुफ़िया तदबीर की

اللّٰهُ ؕ	وَاللّٰهُ	خَيْرُ	الْمٰكِرِيْنَ ﴿54﴾ ع	اِذْ	قَالَ	اللّٰهُ	يٰعِيْسٰٓى
अल्लाह ने	और अल्लाह	बेहतरीन है	ख़ुफ़िया तदबीर करने वालों में	जब	फ़रमाया	अल्लाह ने	ऐ ईसा

ع الثلثة 5 13 13

اِنِّيْ	مُتَوَفِّيْكَ	وَرَافِعُكَ	اِلَيَّ	وَمُطَهِّرُكَ	مِنَ الَّذِيْنَ
बेशक मैं	पूरा-पूरा लेने वाला हूं तुझे	और उठा लेने वाला हूं	तरफ़ अपने	और पाक करने वाला हूं तुझे	उनसे जिन्होंने

كَفَرُوْا	وَجَاعِلُ	الَّذِيْنَ	اتَّبَعُوْكَ	فَوْقَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْٓا
कुफ़्र किया	और बनाने वाला हूं	उनको जिन्होंने	पैरवी की तेरी	ऊपर	उनके जिन्होंने	कुफ़्र किया

اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ	ثُمَّ	اِلَيَّ	مَرْجِعُكُمْ	فَاَحْكُمُ	بَيْنَكُمْ
क़यामत के दिन तक	फिर	तरफ़ मेरे ही	लौटना है तुम्हारा	तो मैं फैसला करूंगा	दर्मियान तुम्हारे

فِيْمَا	كُنْتُمْ	فِيْهِ	تَخْتَلِفُوْنَ ﴿55﴾	فَاَمَّا	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
उसमें जो	थे तुम	जिसमें	तुम इख़्तिलाफ़ करते	तो रहे	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

فَاُعَذِّبُهُمْ	عَذَابًا	شَدِيْدًا	فِي الدُّنْيَا	وَالْاٰخِرَةِ ۫	وَمَا	لَهُمْ
तो मैं अज़ाब दूंगा उन्हें	अज़ाब	सख़्त	दुनिया में	और आख़िरत में	और नहीं होगा	उनके लिए

مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿56﴾	وَاَمَّا	الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَعَمِلُوا	الصّٰلِحٰتِ
मददगारों में से कोई	और रहे	वो जो	ईमान लाए	और उन्होंने अमल किए	नेक

فَيُوَفِّيْهِمْ	اُجُوْرَهُمْ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يُحِبُّ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿57﴾	ذٰلِكَ
तो वो पूरे-पूरे देगा उन्हें	अज्र उनके	और अल्लाह	नहीं वो मुहब्बत रखता	ज़ालिमों से	ये

نَتْلُوْهُ	عَلَيْكَ	مِنَ الْاٰيٰتِ	وَالذِّكْرِ	الْحَكِيْمِ ﴿58﴾	اِنَّ	مَثَلَ
हम तिलावत कर रहे हैं उसे	आप पर	आयात में से	और ज़िक्र	बहुत हिकमत वाले से	बेशक	मिसाल

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عِيْسٰى	عِنْدَ اللّٰهِ	كَمَثَلِ	اٰدَمَ ؕ	خَلَقَهٗ	مِنْ تُرَابٍ	ثُمَّ	قَالَ
ईसा की	अल्लाह के नज़दीक	मानिंद मिसाल	आदम के है	उस ने पैदा किया उसे	मिट्टी से	फिर	फ़रमाया

لَهٗ	كُنْ	فَيَكُوْنُ ﴿59﴾	اَلْحَقُّ	مِنْ رَّبِّكَ	فَلَا	تَكُنْ
उसे	हो जा	तो वो हो गया	हक़	आप के रब की तरफ़ से	तो ना	आप हों

مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ﴿60﴾	فَمَنْ	حَآجَّكَ	فِيْهِ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا
शक करने वालों में से	तो जो कोई	झगड़ा करे आपसे	उसमें	बाद उसके	जो

جَآءَكَ	مِنَ الْعِلْمِ	فَقُلْ	تَعَالَوْا	نَدْعُ	اَبْنَآءَنَا	وَ اَبْنَآءَكُمْ
आ गया आप के पास	इल्म में से	तो कह दीजिए	आओ	हम बुलाते हैं	अपने बेटों को	और तुम्हारे बेटों को

وَنِسَآءَنَا	وَنِسَآءَكُمْ	وَاَنْفُسَنَا	وَاَنْفُسَكُمْ قف	ثُمَّ	نَبْتَهِلْ
और अपनी औरतों को	और तुम्हारी औरतों को	और हम ख़ुद	और तुम ख़ुद	फिर	हम गिड़गिड़ा कर दुआ करें

فَنَجْعَلْ	لَّعْنَتَ	اللّٰهِ	عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿61﴾	اِنَّ	هٰذَا	لَهُوَ
फिर हम करें	लानत	अल्लाह की	झूठों पर	बेशक	ये	अलबत्ता वो

الْقَصَصُ	الْحَقُّ ۚ	وَمَا	مِنْ اِلٰهٍ	اِلَّا	اللّٰهُ ؕ	وَاِنَّ	اللّٰهَ
क़िस्से हैं	जो सच्चे हैं	और नहीं	कोई इलाह (बरहक़)	सिवाए	अल्लाह के	और बेशक	अल्लाह

لَهُوَ	الْعَزِيْزُ	الْحَكِيْمُ ﴿62﴾	فَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَاِنَّ	اللّٰهَ	عَلِيْمٌۢ
अलबत्ता वो	बहुत ज़बरदस्त है	ख़ूब हिक्मत वाला है	फिर अगर	वो मुंह फेर जाऐं	तो बेशक	अल्लाह	ख़ूब जानने वाला है

ع 6 9 14

بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿63﴾ ع	قُلْ	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	تَعَالَوْا	اِلٰى كَلِمَةٍ	سَوَآءٍ
फ़साद करने वालों को	कह दीजिए	ऐ अहले किताब	आओ	तरफ़ एक कलमे के	जो बराबर है

بَيْنَنَا	وَبَيْنَكُمْ	اَلَّا	نَعْبُدَ	اِلَّا	اللّٰهَ	وَلَا	نُشْرِكَ
हमारे दर्मियान	और तुम्हारे दर्मियान	कि ना	हम इबादत करें	मगर	अल्लाह की	और ना	हम शरीक करें

بِهٖ
साथ उस के

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

شَيْـًٔا	وَّلَا	يَتَّخِذَ	بَعْضُنَا	بَعْضًا	اَرْبَابًا	مِّنْ دُوْنِ	اللّٰهِ ؕ
किसी चीज़ को	और ना	बनाए	बाज़ हमारा	बाज़ को	(मुख़्तलिफ़) रब	सिवाए	अल्लाह के

فَاِنْ	تَوَلَّوْا	فَقُوْلُوا	اشْهَدُوْا	بِاَنَّا	مُسْلِمُوْنَ ﴿64﴾
फिर अगर	वो मुंह फेर जाऐं	तो कह दो	गवाह रहो	कि बेशक हम तो	फ़रमांबरदार हैं

يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	لِمَ	تُحَآجُّوْنَ	فِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ	وَمَآ	اُنْزِلَتِ
ऐ अहले किताब	क्यों	तुम झगड़ा करते हो	इब्राहीम के बारे में	हालांकि नहीं	उतारी गई

التَّوْرٰىةُ	وَالْاِنْجِيْلُ	اِلَّا	مِنْۢ بَعْدِهٖ ؕ	اَفَلَا	تَعْقِلُوْنَ ﴿65﴾	هٰٓاَنْتُمْ
तौरात	और इंजील	मगर	बाद उसके	क्या भला नहीं	तुम अक़्ल रखते	हां तुम

هٰٓؤُلَآءِ	حَاجَجْتُمْ	فِيْمَا	لَكُمْ	بِهٖ	عِلْمٌ	فَلِمَ
वो लोग हो	झगड़ा किया तुमने	उस मामले में जो है	तुम्हारे लिए	जिसका	कुछ इल्म	तो क्यों

تُحَآجُّوْنَ	فِيْمَا	لَيْسَ	لَكُمْ	بِهٖ	عِلْمٌ ؕ	وَاللّٰهُ	يَعْلَمُ
तुम झगड़ते हो	उस मामले में जो	नहीं है	तुम्हारे लिए	जिसका	कोई इल्म	और अल्लाह	जानता है

وَاَنْتُمْ	لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿66﴾	مَا	كَانَ	اِبْرٰهِيْمُ	يَهُوْدِيًّا	وَّلَا
और तुम	नहीं तुम जानते	ना	था	इब्राहीम	यहूदी	और ना

نَصْرَانِيًّا	وَّلٰكِنْ	كَانَ	حَنِيْفًا	مُّسْلِمًا ؕ	وَمَا	كَانَ
नस्रानी	और लेकिन	था वो	यक़सू	मुसलमान	और ना	था वो

مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿67﴾	اِنَّ	اَوْلَى	النَّاسِ	بِاِبْرٰهِيْمَ	لَلَّذِيْنَ
मुशरिकों में से	बेशक	क़रीबतर	लोगों में से	इब्राहीम के	अलबत्ता वो हैं जिन्होंने

اتَّبَعُوْهُ	وَهٰذَا	النَّبِيُّ	وَالَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا ؕ	وَاللّٰهُ	وَلِيُّ
पैरवी की उसकी	और ये	नबी	और वो जो	ईमान लाए	और अल्लाह	दोस्त है

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿68﴾	وَدَّتْ	طَّآئِفَةٌ	مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	لَوْ	يُضِلُّوْنَكُمْ ؕ
मोमिनों का	चाहा	एक गिरोह ने	अहले किताब में से	काश	वो गुमराह कर दें तुम्हें

وَمَا	يُضِلُّوْنَ	اِلَّآ	اَنْفُسَهُمْ	وَمَا	يَشْعُرُوْنَ ﴿69﴾	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ
और नहीं	वो गुमराह करते	मगर	अपने नफ़्सों को	और नहीं	वो शऊर रखते	ऐ अहले किताब

لِمَ	تَكْفُرُوْنَ	بِاٰيٰتِ اللّٰهِ	وَ اَنْتُمْ	تَشْهَدُوْنَ ﴿70﴾	يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ	
क्यों	तुम कुफ़्र करते हो	अल्लाह की आयात का	हालांकि तुम	तुम गवाह हो	ऐ अहले किताब	

لِمَ	تَلْبِسُوْنَ	الْحَقَّ	بِالْبَاطِلِ	وَ تَكْتُمُوْنَ	الْحَقَّ	وَ اَنْتُمْ
क्यों	तुम गुड-मुड करते हो	हक़ को	बातिल से	और तुम छुपाते हो	हक़ को	हालांकि तुम

ع 7 8 15

تَعْلَمُوْنَ ﴿71﴾ ع	وَ قَالَتْ	طَّآئِفَةٌ	مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	اٰمِنُوْا	بِالَّذِيْٓ
तुम जानते हो	और कहा	एक गिरोह ने	अहले किताब में से	ईमान ले आओ	उस चीज़ पर

اُنْزِلَ	عَلَى الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	وَجْهَ	النَّهَارِ	وَاكْفُرُوْٓا
नाज़िल की गई	उन पर जो	ईमान लाए	अव्वल (वक़्त)	दिन के	और इंकार कर दो

اٰخِرَهٗ	لَعَلَّهُمْ	يَرْجِعُوْنَ ﴿72﴾ ۚ	وَلَا	تُؤْمِنُوْٓا	اِلَّا	لِمَنْ
उसके आख़िर में	ताकि वो	वो लौट आएं	और ना	तुम मानो	मगर	उस की जो

تَبِعَ	دِيْنَكُمْ ؕ	قُلْ	اِنَّ	الْهُدٰى	هُدَى	اللّٰهِ ۙ	اَنْ
पैरवी करे	तुम्हारे दीन की	कह दीजिए	बेशक	हिदायत	हिदायत है	अल्लाह की	कि

يُّؤْتٰٓى	اَحَدٌ	مِّثْلَ	مَآ	اُوْتِيْتُمْ	اَوْ	يُحَآجُّوْكُمْ	عِنْدَ	رَبِّكُمْ ؕ
दिया जाए	कोई एक	मानिंद	उसके जो	दिए गए तुम	या (ये कि)	वो झगड़ा करेंगे तुमसे	पास	तुम्हारे रब के

قُلْ	اِنَّ	الْفَضْلَ	بِيَدِ	اللّٰهِ ۚ	يُؤْتِيْهِ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ
कह दीजिए	बेशक	फ़ज़्ल	हाथ में है	अल्लाह के	वो देता है उसे	जिसे	वो चाहता है

وَاللّٰهُ	وَاسِعٌ	عَلِيْمٌ ﴿73﴾ ۙ			
और अल्लाह	वुसअत वाला है	ख़ूब इल्म वाला है			

يَّخْتَصُّ	بِرَحْمَتِهٖ	مَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَاللّٰهُ	ذُو الْفَضْلِ	الْعَظِيْمِ ﴿74﴾
वो ख़ास कर लेता है	साथ अपनी रहमत के	जिसे	वो चाहता है	और अल्लाह	फ़ज़्ल वाला है	बहुत बड़े

وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ	مَنْ	اِنْ	تَاْمَنْهُ	بِقِنْطَارٍ	يُّؤَدِّهٖۤ
और अहले किताब में से कोई है	जो	अगर	आप अमानत दें उसे	एक ख़ज़ाना	वो अदा कर देगा उसे

اِلَيْكَ ۚ	وَمِنْهُمْ	مَّنْ	اِنْ	تَاْمَنْهُ	بِدِيْنَارٍ	لَّا يُؤَدِّهٖۤ
तरफ आप के	और कोई वो है	जो	अगर	आप अमानत दें उसे	एक दीनार	नहीं वो अदा करेगा उसे

اِلَيْكَ	اِلَّا	مَا دُمْتَ	عَلَيْهِ	قَآئِمًا ؕ	ذٰلِكَ	بِاَنَّهُمْ	قَالُوْا
तरफ़ आपके	मगर	जब तक आप रहें	उस पर	क़ायम / खड़े	ये	बवजह इसके कि वो	वो कहते हैं

لَيْسَ	عَلَيْنَا	فِى الْاُمِّيّٖنَ	سَبِيْلٌ ۚ	وَيَقُوْلُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ
नहीं है	हम पर	उम्मियों के बारे में	कोई रास्ता (मुआख़ज़ा)	और वो कहते हैं	अल्लाह पर	झूठ

وَهُمْ	يَعْلَمُوْنَ ﴿75﴾	بَلٰى	مَنْ	اَوْفٰى	بِعَهْدِهٖ	وَاتَّقٰى	فَاِنَّ
हालांकि वो	वो जानते हैं	क्यों नहीं	जिस ने	पूरा किया	अपने अहद को	और तक़वा किया	तो बेशक

اللّٰهَ	يُحِبُّ	الْمُتَّقِيْنَ ﴿76﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	يَشْتَرُوْنَ	بِعَهْدِ اللّٰهِ
अल्लाह	मुहब्बत रखता है	मुत्तक़ी लोगों से	बेशक	वो लोग जो	लेते हैं	बदले अल्लाह के अहद के

وَاَيْمَانِهِمْ	ثَمَنًا	قَلِيْلًا	اُولٰٓئِكَ	لَا خَلَاقَ	لَهُمْ	فِى الْاٰخِرَةِ
और अपनी क़समों के	क़ीमत	थोड़ी	यही लोग हैं	नहीं कोई हिस्सा	उन के लिए	आख़िरत में

وَلَا	يُكَلِّمُهُمُ	اللّٰهُ	وَلَا	يَنْظُرُ	اِلَيْهِمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ	وَلَا
और ना	कलाम करेगा उनसे	अल्लाह	और ना	वो देखेगा	तरफ़ उन के	दिन	क़यामत के	और ना

يُزَكِّيْهِمْ ۪	وَلَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ ﴿77﴾	وَاِنَّ	مِنْهُمْ	لَفَرِيْقًا
वो पाक करेगा उन्हें	और उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	और बेशक	उनमें से	अलबत्ता एक गिरोह (के लोग) हैं

يَّلْوٗنَ	اَلْسِنَتَهُمْ	بِالْكِتٰبِ	لِتَحْسَبُوْهُ	مِنَ الْكِتٰبِ	وَمَا	هُوَ
जो मोड़ते हैं	अपनी ज़बानों को	साथ किताब के	ताकि तुम समझो उसे	किताब में से	हालांकि नहीं	वो

مِنَ الْكِتٰبِ ۚ	وَيَقُوْلُوْنَ	هُوَ	مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ	وَمَا	هُوَ
किताब में से	और वो कहते हैं	वो	अल्लाह के पास से है	हालांकि नहीं	वो

مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ	وَيَقُوْلُوْنَ	عَلَى اللّٰهِ	الْكَذِبَ	وَهُمْ	يَعْلَمُوْنَ ﴿78﴾
अल्लाह के पास से	और वो कहते हैं	अल्लाह पर	झूठ	हालांकि वो	वो जानते हैं

مَا	كَانَ	لِبَشَرٍ	اَنْ	يُّؤْتِيَهُ	اللّٰهُ	الْكِتٰبَ	وَالْحُكْمَ
नहीं	है	किसी बशर के लिए	कि	दे उसे	अल्लाह	किताब	और हुकूमत

وَالنُّبُوَّةَ	ثُمَّ	يَقُوْلَ	لِلنَّاسِ	كُوْنُوْا	عِبَادًا	لِّيْ
और नुबुव्वत	फिर	वो कहे	लोगों से	हो जाओ	बंदे	मेरे

مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَلٰكِنْ	كُوْنُوْا	رَبّٰنِيّٖنَ	بِمَا	كُنْتُمْ	تُعَلِّمُوْنَ
सिवाए	अल्लाह के	और लेकिन	हो जाओ	रब वाले	बवजह उसके जो	हो तुम	तुम तालीम देते

الْكِتٰبَ	وَبِمَا	كُنْتُمْ	تَدْرُسُوْنَ ﴿79﴾ ۙ	وَلَا	يَاْمُرَكُمْ	اَنْ
किताब की	और बवजह उसके जो	हो तुम	तुम पढ़ते	और नहीं	वो हुक्म देता तुम्हें	कि

تَتَّخِذُوا	الْمَلٰٓئِكَةَ	وَالنَّبِيّٖنَ	اَرْبَابًا ؕ	اَيَاْمُرُكُمْ	بِالْكُفْرِ	بَعْدَ
तुम बना लो	फ़रिश्तों को	और नबियों को	(मुख़्तलिफ़) रब	क्या वो हुक्म देगा तुम्हें	कुफ़्र का	बाद इसके

ع 8 9 16

اِذْ	اَنْتُمْ	مُّسْلِمُوْنَ ﴿80﴾ ع	وَاِذْ	اَخَذَ	اللّٰهُ	مِيْثَاقَ	النَّبِيّٖنَ
जब	तुम	मुसलमान हो	और जब	लिया	अल्लाह ने	पुख़्ता अहद	नबियों से

لَمَآ	اٰتَيْتُكُمْ	مِّنْ كِتٰبٍ	وَّحِكْمَةٍ	ثُمَّ	جَآءَكُمْ	رَسُوْلٌ
अलबत्ता जो	दूं मैं तुम्हें	किताब में से	और हिकमत में से	फिर	आ जाए तुम्हारे पास	एक रसूल

مُّصَدِّقٌ	لِّمَا	مَعَكُمْ	لَتُؤْمِنُنَّ	بِهٖ	وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ	قَالَ
तसदीक़ करने वाला	उस की जो	तुम्हारे पास है	अलबत्ता तुम ज़रूर ईमान लाओगे	उस पर	और अलबत्ता तुम ज़रूर मदद करोगे उसकी	फ़रमाया

ءَاَقْرَرْتُمْ	وَاَخَذْتُمْ	عَلٰى ذٰلِكُمْ	اِصْرِىْ ؕ	قَالُوْٓا	اَقْرَرْنَا ؕ	قَالَ
क्या इक़रार किया तुमने	और लिया तुमने	उस पर	अहद मेरा	उन्होंने कहा	इक़रार किया हमने	फ़रमाया

فَاشْهَدُوْا	وَاَنَا	مَعَكُمْ	مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿81﴾	فَمَنْ	تَوَلّٰى	بَعْدَ
पस गवाह रहो	और मैं हूं	साथ तुम्हारे	गवाहों में से	तो जो कोई	मुंह मोड़ जाए	बाद

ذٰلِكَ	فَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الْفٰسِقُوْنَ ﴿82﴾	اَفَغَيْرَ	دِيْنِ اللّٰهِ	يَبْغُوْنَ
इसके	तो यही लोग हैं	वो	जो फासिक़ हैं	क्या भला अलावा	अल्लाह के दीन के	वो (कुछ और) तलाश करते हैं

وَلَهٗٓ	اَسْلَمَ	مَنْ	فِى السَّمٰوٰتِ	وَالْاَرْضِ	طَوْعًا	وَّكَرْهًا
हालांकि उसी के लिए	फ़रमांबरदार हुआ	जो कोई	आसमानों में	और ज़मीन में है	खुशी से	और ना खुशी से

وَّاِلَيْهِ	يُرْجَعُوْنَ ﴿83﴾	قُلْ	اٰمَنَّا	بِاللّٰهِ	وَمَآ	اُنْزِلَ	عَلَيْنَا
और तरफ़ उसी के	वो लौटाए जाऐंगे	कह दीजिए	ईमान लाए हम	अल्लाह पर	और जो	नाज़िल किया गया	हम पर

وَمَآ	اُنْزِلَ	عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ	وَاِسْمٰعِيْلَ	وَاِسْحٰقَ	وَيَعْقُوْبَ	
और जो	नाज़िल किया गया	इब्राहीम पर	और इसमाईल	और इसहाक़	और याक़ूब	

وَالْاَسْبَاطِ	وَمَآ	اُوْتِىَ	مُوْسٰى	وَعِيْسٰى	وَالنَّبِيُّوْنَ	مِنْ رَّبِّهِمْ ۖ
और औलादे याक़ूब पर	और जो	दिए गए	मूसा	और ईसा	और तमाम अम्बिया	अपने रब की तरफ़ से

لَا نُفَرِّقُ	بَيْنَ	اَحَدٍ	مِّنْهُمْ ۗ	وَنَحْنُ	لَهٗ	مُسْلِمُوْنَ ﴿84﴾
नहीं हम फ़र्क़ करते	दर्मियान	किसी एक के	उनमें से	और हम	उसी के	फ़रमांबरदार हैं

وَمَنْ	يَّبْتَغِ	غَيْرَ	الْاِسْلَامِ	دِيْنًا	فَلَنْ	يُّقْبَلَ	مِنْهُ ۚ
और जो कोई	चाहेगा	सिवाए	इस्लाम के	कोई दीन	तो हरगिज़ नहीं	वो क़ुबूल किया जाएगा	उससे

وَهُوَ	فِي الْاٰخِرَةِ	مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿85﴾	كَيْفَ	يَهْدِي	اللّٰهُ	قَوْمًا
और वो	आख़िरत में	ख़सारा पाने वालों में से होगा	किस तरह	हिदायत देगा	अल्लाह	उस क़ौम को

كَفَرُوْا	بَعْدَ	اِيْمَانِهِمْ	وَشَهِدُوْٓا	اَنَّ	الرَّسُوْلَ	حَقٌّ
जिन्होंने कुफ़्र किया	बाद	अपने ईमान लाने के	और उन्होंने गवाही दी	कि बेशक	रसूल	बरहक़ हैं

وَّجَآءَهُمُ	الْبَيِّنٰتُ ؕ	وَاللّٰهُ	لَا يَهْدِي	الْقَوْمَ	الظّٰلِمِيْنَ ﴿86﴾
और आईं उनके पास	वाज़ेह निशानियां	और अल्लाह	नहीं वो हिदायत देता	उन लोगों को	जो ज़ालिम हैं

اُولٰٓئِكَ	جَزَآؤُهُمْ	اَنَّ	عَلَيْهِمْ	لَعْنَةَ	اللّٰهِ	وَالْمَلٰٓئِكَةِ	وَالنَّاسِ
यही लोग हैं	बदला उनका	कि बेशक	उन पर	लानत है	अल्लाह की	और फ़रिश्तों की	और लोगों की

اَجْمَعِيْنَ ﴿87﴾ لَا	خٰلِدِيْنَ	فِيْهَا ۚ	لَا يُخَفَّفُ	عَنْهُمُ	الْعَذَابُ	وَلَا
सबके सबकी	हमेशा रहने वाले हैं	उसमें	ना हल्का किया जाएगा	उनसे	अज़ाब	और ना

هُمْ	يُنْظَرُوْنَ ﴿88﴾	اِلَّا	الَّذِيْنَ	تَابُوْا	مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ	وَاَصْلَحُوْا
वो	वो मोहलत दिए जाऐंगे	मगर	वो जिन्होंने	तौबा की	बाद उसके	और इस्लाह की

فَاِنَّ	اللّٰهَ	غَفُوْرٌ	رَّحِيْمٌ ﴿89﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
तो बेशक	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला है	निहायत रहम करने वाला है	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

بَعْدَ	اِيْمَانِهِمْ	ثُمَّ	ازْدَادُوْا	كُفْرًا	لَّنْ	تُقْبَلَ
बाद	अपने ईमान के	फिर	वो बढ़ते गए	कुफ़्र में	हरगिज़ ना	क़ुबूल की जाएगी

تَوْبَتُهُمْ ۚ	وَاُولٰٓئِكَ	هُمُ	الضَّآلُّوْنَ ﴿90﴾	اِنَّ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا
तौबा उनकी	और यही लोग हैं	वो	जो गुमराह हैं	बेशक	वो जिन्होंने	कुफ़्र किया

وَمَاتُوْا	وَهُمْ	كُفَّارٌ	فَلَنْ	يُّقْبَلَ	مِنْ اَحَدِهِمْ
और मर गए	इस हाल में कि वो	काफ़िर थे	तो हरगिज़ ना	क़ुबूल किया जाएगा	उनमें से किसी एक से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِّلْءُ الْاَرْضِ	ذَهَبًا	وَّلَوِ	افْتَدٰى	بِهٖ ؕ	اُولٰٓئِكَ
ज़मीन भर	सोना	और अगरचे	वो फिदया दें	उसका	यही लोग हैं

ع 9 11 17

لَهُمْ	عَذَابٌ	اَلِيْمٌ	وَّمَا	لَهُمْ	مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿91﴾ ع
उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक	और नहीं	उनके लिए	मददगारों में से कोई

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION